चुक्का





मुन्नी कामत



चुक्का

(मैथिली बाल कथा-संग्रह)

सप्रेम भेंट
श्री गजेंद्र ठाकुर

मुन्नी कामत

मुन्नी कामत
27/9/022

नवारम्भ
मधुबनी/पटना

ISBN : 978-93-934040-0-8

चुक्का

(मैथिली बाल कथा-संग्रह)

प्रथम संस्करण : 2022

मूल्य : रु. 125

रेखाचित्र : रौनक एवं अनिशा

प्रकाशक

नवारम्भ

मधुबनी : श्री भवन, वार्ड न.-2,

निकट राम-जानकी मन्दिर, बिहार- 847211

पटना : 63, एम.आई.जी.

हनुमान नगर, पिन-800020

Email : navarambhprakashan@gmail.com

मो.- 09304349384

मुद्रक

सीएमजे प्रिंटिंग प्रेस

अल्फा-2, ग्रेटर नोएडा, उप्र.

Chukka

A Collection of Maithili Stories for Children By **Munni Kamat**

First Edition : 2022, Price : Rs 125/-

कथा-क्रम

सुन्दर भविष्यक संकल्पना

बाल साहित्यक लेखनमे लेखिका लोकनिक अभिरूचि त' रहलनि अछि किन्तु समधानिक' अथवा निरन्तरतामे लेखन नहिएँ जकाँ भेल अछि। लिली रे आ उषाकिरण खान जीक बाद एक्कहि बेर लक्ष्मी सिंह ठाकुर, कल्पना झा, वन्दना झा आ मुन्नी कामत जी लग आबय पड़त। ओना लिखैत त' रहलीह अछि अनेक लेखिका किन्तु पुस्तकाकार कम्मे गोटे भेलीह अछि।

मुन्नी कामत जीक ई बाल कथा-संग्रह बहुतो अर्थमे नीक लागल, विषय-वस्तुक स्तरपर, भाषाक स्तरपर आ भावक कोमलता एवं संदेश देबाक स्तरपर। बच्चा सभक ज्ञानवर्द्धन करबामे ई संग्रह सहायक भ' सकैत अछि। कथाक संग चित्रक उपयोग भेलासँ बच्चा सभक मानसमे कथा-सार आ संदेश अपन स्थान सुरक्षित क' लेत।

लेखिका मुन्नी कामत कविता-कथा क्षेत्रक परिचित नाम छथि। गाम आ शहर, दुनू ठाम रहबाक अनुभव छनि। दुनू ठामक बच्चा सभक मनोवृति बुझबाक आ तदनुरूप कथा बुनबाक हिनक हुनर प्रभावकारी अछि। एखन जे समय अछि, समाजक स्थिति अछि ताहिमे बच्चा सभकेँ मानवीय गुणसँ ओतप्रोत करब अत्यावश्यक अछि। सहिष्णु आ संवेदनशील व्यक्तिक निर्माण करब प्रत्येक माता-पिताक पहिल कर्तव्य थिक किन्तु आजुक सन्दर्भमे एहिपर विशेष साकांक्ष रहबाक आवश्यकता अछि। 'चुक्का'क कथा सभ हमरा सभक चाँकि बढ़बैत एकटा सुन्दर, सार्थक भविष्यक संकल्पना उपस्थित करैत अछि। ई पुस्तक अवश्य पढ़ल जयबाक चाही।

—अजित आजाद

आमुख

बाल मन गढ़ैए
नित कतेको खिस्सा
वएह अधबोलिया बोल लिखैत छी
ओझरैल मोनक गिरह खोलैत
दिवारपर खीचल कोयलासँ
बिन आकारक आकार लिखैत छी
बंद छल जे मनक अतलमे
बाल-बोधक ओ राज खोलै छी।

बाल-बोध जे छल-कपट, लालच, भयसँ निर्भीक अपन मासुमियत संग पग-पग खिस्सा गढ़ैत आगाँ बढ़ैत अछि से हमरा कतेक किछु सिखा जाइत अछि। हुनका लग व्यंगक भरमार अछि। उपदेशक अंबार अछि। ओहि सभ पूंजीकेँ संचित कऽ हम अपन ई पहिल बाल कथा-संग्रह 'चुक्का' सभ बाल-बोधकेँ समर्पित करैत अपार हर्षक अनुभव कऽ रहल छी।

नेना-भूटकाक बातकेँ अपन शब्दसँ सजा पाठक लोकनिक आगाँ परोसि रहल छी। हमरा उम्मीद अछि जे ई थार अहाँक रुचिगर लागत। ई सभ कथा अहाँकेँ अपन बच्चाक कहल बात लागत से भरोस अछि।

गद्यमे हम ई पहिल प्रयोग पाठकगणकेँ समर्पित करैत छी। ऐगो आग्रह जे रचना पढ़ि अपन प्रतिक्रिया अवश्य दी, ताकि ओकर अनुकरण करैत हम आगाँ साहित्यक सृजन करैत रही।

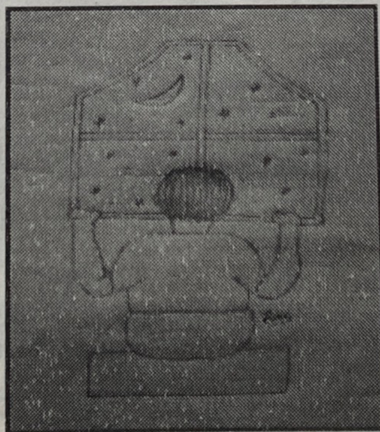
एहि कथा-संग्रहक चित्र हेतु बउआ रौनक आ बुच्ची अनिशाकेँ बहुत रास आशीर्वाद जे हमर इच्छानुसार कथा अनुरूप अपन चित्रकलाकेँ एतेक सुन्दर निखारलक। एहि सुन्दर सचित्र कथा-संग्रह लेल अहाँक कला परीक्षणीय अछि। अहाँ दुनू दिन-दिन सफलताक सोपान चढ़ैत जाउ। श्रेष्ठजनसँ अहाँ दुनूकेँ आशीष भेटय।

—मुन्नी कामत

आस्थाक मूर्ति

कन्हैया दुआरिपर बाबाक पेटमे सटि खिड़कीसँ तरेगनकेँ एकटक्क निहारैत दुनू आँखिसँ नोर टघराबैत बाजल, 'माय कियैक अहाँ तरेगन बनि गेलहुँ, हमरा अहाँ बड़ मोन पड़ैत छी। अहाँ जे हमरा खिस्सा सुनाक' सुतबैत रही से हिस्सक नै छूटल। खिस्सा तँ बाबा सभ राति सुनबैत छथि, मुदा अधरतिया धरि निन्न नै अबैत अछि, आब आबि जाउ माय...!'

बाबा पोताक एहन तरहक कानब सुनि पँजियाकऽ गलजोड़बाकऽ अपन हृदयकेँ पाथर बना पोताक नोर पोछैत कहलखिन, 'बउआ, भगवानक घरमे एकटा अहीं जकाँ बउआ छैक मुदा अहाँसँ बड़ छोट, भगवान लग माय नै छल तेँ ओ अहाँक मायकेँ ओतहि बजा लेलखिन। ओहि छोट बेदराकेँ खिस्सा सुनाबय लेल आ अहाँक लेल दोसर माय पठा देलखिन। दोसर माय तँ अहाँसँ माइये जकाँ प्रेम करैत छथि, माइये जकाँ खिस्सा सुनबैत छथि। अहींक जिद्द रहैत छल जे हम बाबे लग सूतब, कहू तँ दोसर माय कोनो अधलाह व्यवहार करैत छथि अहाँसँ...?' रामस्वरूप कन्हैयाकेँ कोरामे उठा टहलबैत बजला।



'बाबा, हमरा अपने माय चाही। दोसर माय बहुत दुलार करैत छथि तइयो हमरा अपनहि माय चाही। बाबा, भगवानसँ कहियो जे ओ हमरा हमर माय पठा देथिन...।' यैह रटैत कन्हैया सुति रहल। सभ राति एहिना कन्हैया मायकेँ हठ करैत रहैत छल। विधनोकेँ केहन विधान छैक से नै कहि! कखन ककरा कोन दुख दऽ दैत छथि! रामस्वरूप यैह

सवाल-जवाब स्वंयसँ करैत कन्हैयाकेँ सुतबय लगला।

एक बरख पहिने कन्हैयाक माय गर्भवती छलीह, प्रसव कालमे किछु परेशानी भेलनि आ नवजात संगहि अपनहु कन्हैयाकेँ छोड़ि परलोक सिधारि गेलीह। तहियासँ कन्हैया सभ राति मायक एहिना बाट जोहैत रहैत अछि। रामस्वरूप किछु दिन पहिने अपन बेटाकेँ दोसर बियाह कऽ देलनि जे साक्षात ममताक मूरत छथि, पूरा परिवार आ कन्हैयाकेँ मायसँ बढ़िकऽ दुलार करैत छथि, मुदा कन्हैयाकेँ मन-मस्तिष्कमे जे मायक छवि आ स्नेह



पैसल अछि ओहिमे ओ आब ककरो जगह नै दैत अछि।

धीरे-धीरे समय बीतल। आब कन्हैयाकेँ एकटा भाइ आ बहिन सेहो आबि गेल। आब कन्हैया सात बरखक भऽ गेल मुदा एखनो सभ राति ओ अपन मायक बाट जोहैत रहैत अछि।

कन्हैया एकटा कुम्हारक बेटा छल। नान्हिएटासँ ओ अपना घरमे चाक चलैत देखैत आयल। एक दिन ओ अपन बाबूकेँ भगवानक मूर्ति बनबैत देखि पुछलक, 'बाबू, एहि मूर्तिमे भगवान कखन अबैत छथि? जखन ई पूरा बनि जाइत अछि तखन आ कि जखन हिनकर पूजा होइत अछि...?'

बेटाक एहि तरहक सवालपर घुमैत चाककेँ रोकैत रतनेश बाजल—'मूर्तिमे जान तँ तखने आबि जाइत छैक जखन ओ कुम्हारक साँचमे ढालल जाइत छैक आ ओकर विभिन्न अंग कुम्हारक हाथसँ गढ़ल जाइत छैक। जाहि रूपमे भगवानकेँ सुमिरैत अछि, भगवान ओही रूपमे प्रकट भऽ जाइत छथि।' रत्नेश कन्हैयाक सवालक जवाब दैत अँगना चलि गेलाह आ कन्हैया ओतहि अपन बाबूक बनल मूर्तिक आगाँ कलजोड़ि ठाढ़ भऽ गेल आ ओकरासँ अपन मायक हाल-चाल पूछय लागल। बेर-बेर पूछलासँ जखन कोनो आवाज

मूर्तिसँ नै आयल तँ ओ फेर बाजय लगैत अछि जे 'हमर आस्था मजबूत नै अछि। हम राति फेर गोहारि लगायब।'

कन्हैया ओहि राति साँझे बाबा लग जा सुतबाक नाटक केलक, बाबा खाइ लेल कतबहु उठौलनि ओ निबदियाकऽ पड़ल रहल। जखन सभ सूति गेल तखन ओ फेर भगवानक मूर्ति आगाँ कलजोड़ि ठाढ़ भऽ अपन मायक हाल पूछय लागल। ओहि अबोधक एहन गोहारिसँ भगवानक कलेजा घमि गेल आ ओ प्रकट भ' गेलाह आ कन्हैयासँ कहलखिन, 'हम अहाँक प्रेम आ भक्तिक आगाँ विवश भऽ गेलहुँ। हम अहाँक माय तँ नै घुरा सकैत छी मुदा एकटा वरदान दैत छी जे अहाँक मायक स्नेह आ दुलार सदिखन अहाँ संगे रहत, अहाँक जीवनमे जे सभ स्त्री औतीह, सभ अहाँक माइयोसँ बढ़िकऽ स्नेह आ दुलार देतीह, अहाँक सकारात्मक इच्छाक पूर्ति स्वतः होइत रहत।' एतेक कहैत भगवान अन्तरध्यान भऽ गेलखिन।

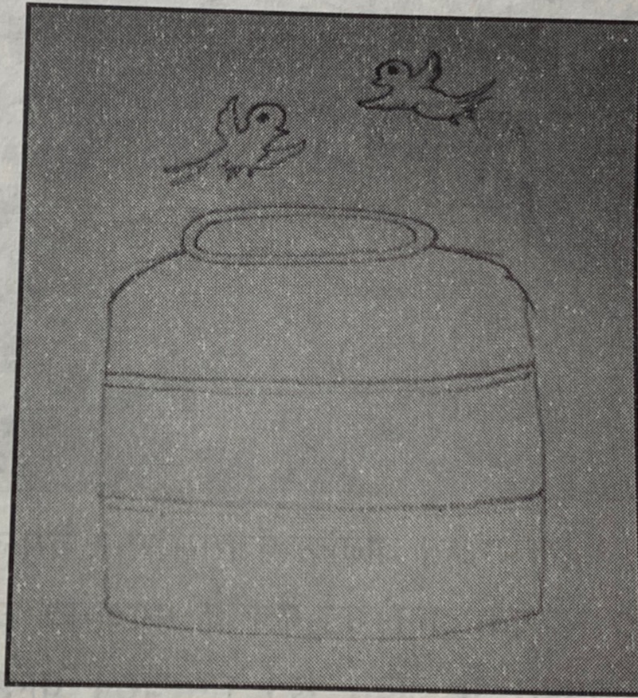


कन्हैया आँखि रगड़ैत बाबाक पँजरासँ सटि बैसल आ बाजल, 'बाबा आइ हमरा एकटा रहस्यक ज्ञान भऽ गेल जे भगवानक घर चलि जाइत छैक से फेरो कहियो वापिस नै अबैत छै। रामस्वरुप कन्हैयाकेँ एहि तरहक बातपर शुन्य भऽ जाइत छथि, फेर किछु काल बाद अपना आपकेँ सम्हारैत कन्हैयाकेँ पुचकारति कहैत छथि–'बउआ जेना भट्ठीसँ निकलल बरतन टूटि गेलापर फेरसँ चाकपर नै चढ़ैत छैक तहिना एहि तनसँ प्राण निकललापर वापस नै अबैत छैक, यैह एहि जीवनक सच्चाइ छैक।'

कन्हैया बाबाक एहि बातक सहमतिमे मूड़ी हिला लेलक आ रतुका बात सोचैत अपन दिनचर्याक काजमे लीन भऽ गेल।

चिनिया-सिनिया

जेठक दुपहरियामे चिनिया नामक मैना अपन संगी सिनिया संगहि दिल्ली जकाँ शहरमे कोठे-कोठे फड़फड़ायल फिरैत छल। धधकैत रौद आ उमस ओकर तरास आर बढ़ा देलक मुदा कतहु एक बूँद पानि नै भेटल कि तखने सिनियाक नजरि कोठापर राखल पानिक टंकीपर गेल ओ चिनियाकेँ ओहि टंकी दिस इशारा करैत कहलक, 'बहिना चलू ओहि टंकी लग, हम अपना चोंचसँ ओहि टंकीमे भूर करब फेर अहाँ पानि पीबि लेब।' चिनियाक एहि तरहक बातसँ सिनियाकेँ जेना लागल जे ओ पानि पीबि लेलक ओकरा देहमे बहुते हुब्बा आबि गेल। दुनू बहिनपा टंकी लग पहुँचि अपन-अपन चोंचसँ टंकीपर प्रहार करय लागल मुदा सफलता हाथ नै लागल, दुनू

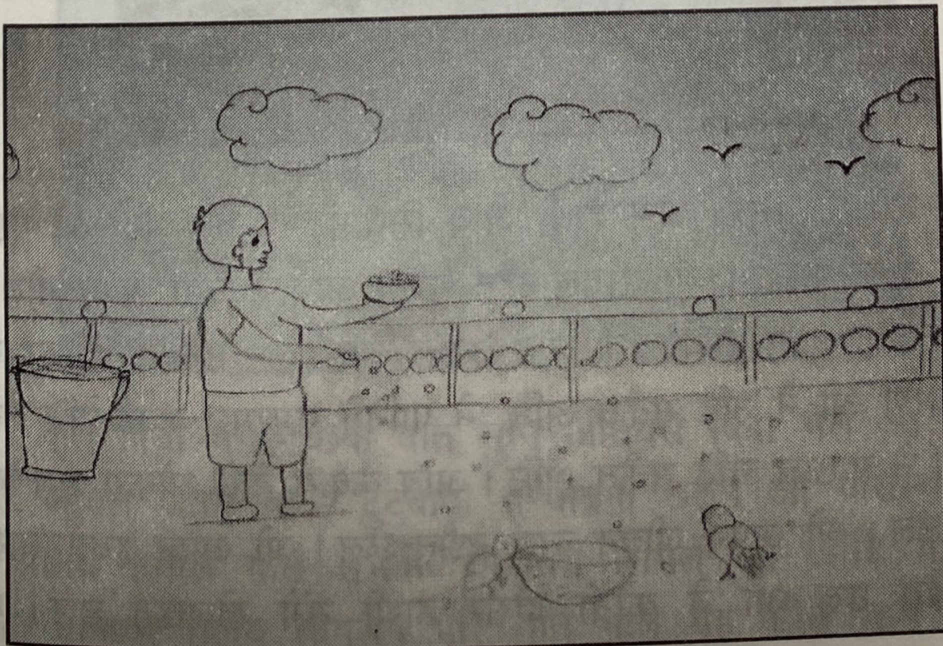


अपसियाँत भऽ ऊपर मेघ दिस निहारय लागल। सिनियाक ध्यान टंकीक भूरपर गेल जे टंकीक झँपनाक करीब एक बीत निच्चाँमे छल। सिनिया बुझलक जे जँ एहि भूर दिससँ घूसबाक प्रयास करी तँ पानि पीबि हम अपन प्राण बचा सकैत छी। सिनिया पूरा जोर लगा ओहि भूरमे अपन मुँह घुसा देलक जोड़ लगाकऽ आधा देह सेहो घुसा लेलक। छोट भूर होयबाक कारणे सिनिया ओहिमे फँसि गेल ओ ने आगू आबि सकैत छल ने पाछू। ओ अपन

बहिनपा सिनियाकेँ बेर-बेर मददि लेल गोहारि लगबैत रहल मुदा चिनिया बेसोह निच्चाँमे पड़ल पानि बिन फक-फक करैत छल कि तखने टंकीसँ हरहराकऽ पानि निच्चाँ खसऽ लागल। टंकी खाली छल टंकीक मालिक ओकरा भरऽ लेल पानिक मोटर चला बिसरि गेल। कनियें कालमे पूरा छत पानिसँ लपालप भरि गेल। चिनिया भरि मोन पानि पीबि जुड़ाइत आ ओहि पानिमे फड़फड़ जरैत देहकेँ भिजा लेलक आ सिनियाकेँ सेहो हाक देबय लागल मुदा सिनियाक निःशब्दी ओकरा चिंतित कऽ देलक।

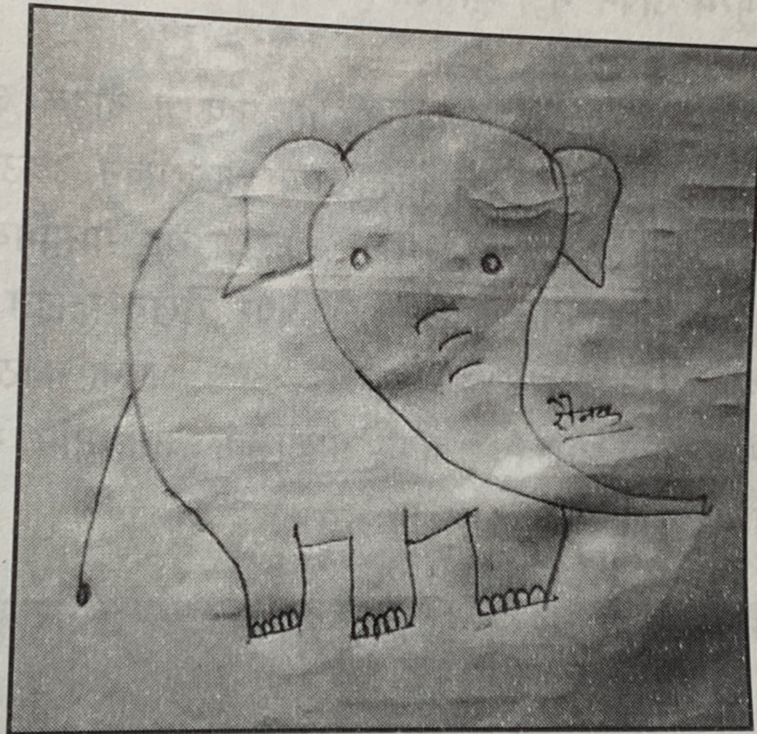
ओ टंकीक चारू दिस उड़ि सिनियाकेँ ताकय लागल कि देखैए सिनिया टंकीक पानिक निकासीबला भूरमे फँसल अछि। ओ अपन बहिनपाकेँ निकालबाक बहुत प्रयास केलक मुदा विफल भऽ गेल। जाहि पानि लेल सिनिया ओहि भूरमे अपन मूड़ी घुसिओने छल वैह पानि ओकर दम घोंटि देलक।

बाबा मुँहसँ ई खिस्सा सुनैत बउआ आकाश दौड़ल आ बाटीमे पानि आनि कोठापर रखै लेल विदा भेल। बाबा पुछलखिन, 'बउआ, एखन रातिमे ई पानिक खेल कियैक करैत छह। आकाश बड़ मासुमियतसँ उत्तर देलक–'बाबा हम एहि पानिक बाटीकेँ कोठापर राखय जाइत छी ताकि फेर कोनो सिनिया टंकीक भूरमे फँसि नै मरै! आब अपना कोठापर हरदम हम मेरखी संगहि पानि राखब।' बाबा आकाशक बात सुनि गदगद मने बहुत रास आशीष देलनि।



गोलू हाथी

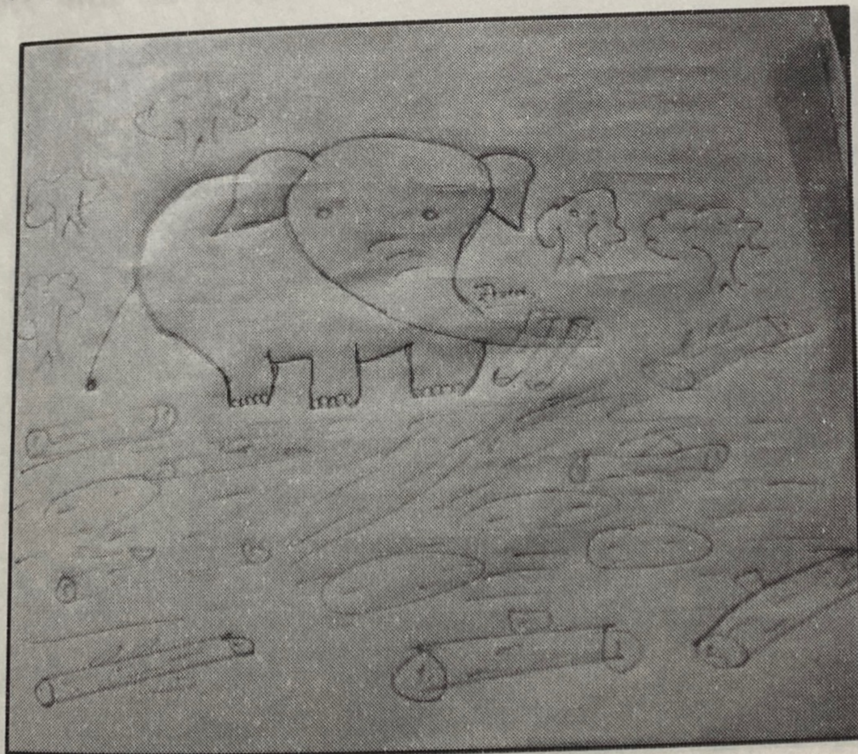
एकटा बोनमे हाथीक झुण्ड रहैत छल। झुण्डमे एकटा मास भरिक हाथीक बच्चा छल– गोलू। गोलू सभक दुलरुआ छल आ बहुत शरारती सेहो छल। सभ हाथी ओकर शरारतिपर हँसैत रहैत छल। कखनो ओ चिड़ै जकाँ उड़बाक प्रयत्न करैत छल, कखनो बानर जकाँ गाछपर चढ़बाक तँ कखनो मगरमच्छ जकाँ पानिमे हेलबाक। ओ सदिखन दोसरक नकल करबाक लेल तबाह रहैत छल। ओकर एहि तरहक व्यवहारपर सभ जानवर खूब हँसैत रहैत छल।



समय बीतल। गोलू हाथी आब सियान भऽ गेल मुदा ओ एखनो वैह सभ कृत्य करबामे ओझरायल रहैत छल। आब ओकरा अपन मोट देह सेहो नै सोहाइ छल कियैक तँ आब ओ ई बूझि गेल छल जे ओकर मोट देहक कारण ओ ने उड़ि सकैत अछि, ने पानिमे मगरमछ जकाँ हेलि सकैत अछि आ ने गाछपर चढ़ि सकैत अछि। आंब ककरो हँसी ओकरा शूल जकाँ भोंकाइ छल। ओ अपन जीवन व्यर्थ बुझैत छल। ओ अपन इच्छानुसार नै खेल पबैत छल आ ने कोनो दोसर हाथी संगे खेलाइत छल। घोर

उदासीनतासँ लिप्त ओ एक दिन अपन जीवनक अन्त करबाक सोचलक आ एकटा अनबुझ रस्तापर विदा भऽ गेल। जखन किछु दूर गेल तँ देखलक जे एकटा खढ़िया गाछ तर दबिक' कुहरि रहल छल, बानर आ चिड़ैया सभ धमगिज्जर मचौने छल मुदा किछु करैमे दुनू असमर्थ छल। गोलू हाथी जखन देखलक तुरत बिना देर कयने अपन सूँढ़ बढ़ाकऽ आसानीसँ ओहि गाछकेँ हटा देलक आ खढ़ियाक जान बचा लेलक।

गोलू अपन मनसुबा नै बदललक आ ककरो किछु कहने फेर ओतयसँ विदा भऽ गेल। राति होइत-होइत अन्हर-बिहाड़ि संगहि घनघोर बरखा होबय लागल। गोलू हाथी एकटा नदी कातमे बैसल छल जतय सभटा मगरमच्छ आपातकालीन बैसकी बजौने छल। जाहिमे सभ मगरमच्छ आसमानसँ बरसैत संकटपर विचार कऽ रहल छल जे 'फेर एहि बरखाक कारण बान्ह टूटत आ हम सभ बेघर भऽ जायब, जहिना पोरूकाँ हमसभ अपन-अपन परिवार आ बच्चासँ दूर भऽ गेलहुँ तहिना फेर आफत आयल अछि। हम सभ जायब तँ कतय जायब, पानि बिन तँ जीबियो नै पायब!'

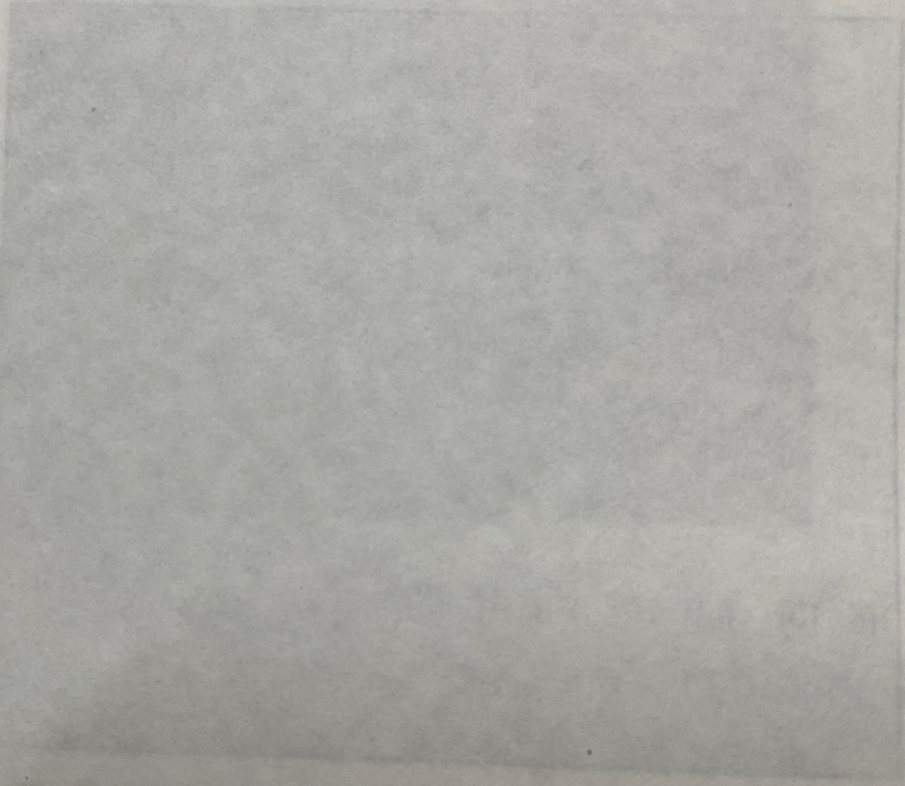


गोलू हाथी मगरमच्छक बात सुनि ओतयसँ विदा भेल आ ओहि जगहपर पहुँचल जतय बान्ह टुटबाक सम्भावना छल। ओ परिस्थितिकेँ भँपैत ओतय लागल गाछ सभकेँ गिराबय लागल आ ओहि गाछकेँ उठा-उठा बान्हपर राखय लागल। भरि राति गोलू यैह करैत रहल। भोर

होइते बरखो कम भेल आ उफनैत नदियो शांत भेल। गोलू अपन होशियारीसँ बान्ह टुटैसँ बचा लेलक संगहि खत्तामे रहि रहल मगरमच्छो सभक जिनगी बचा लेलक।

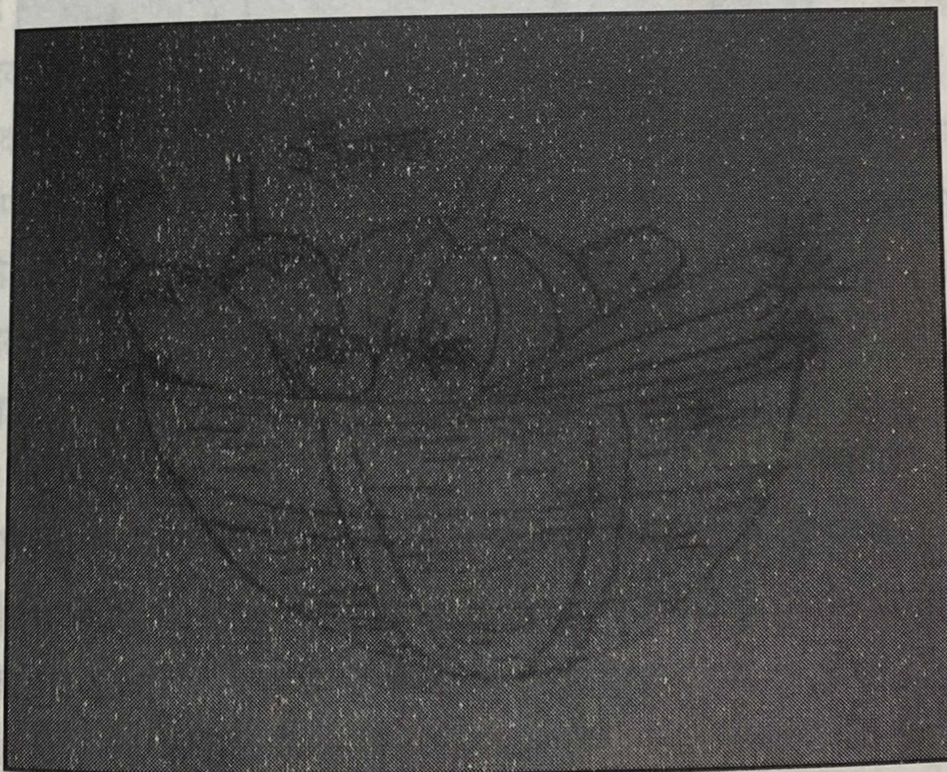
गोलूक एहि तरहक काजक चर्चा पूरा जंगलमे आगिक लुत्ती जकाँ पसरि गेल। गोलू सभक हिरो बनि गेल। सभ जानवर ओकरा एकबेर देखै लेल आ धन्यबाद करै लेल आतुर भऽ गेल। कियो फूलक हार तँ कियो केराक भार नेने गोलू लग पहुँचल। सभक एहि तरहक स्नेह देखि गोलू हाथीकेँ अपन अस्तित्वक ज्ञान भेल।

भगवान सभकेँ अलग-अलग बनौने छथि। सभक एहि धरतीपर महत्व अछि। केकरो जीवन व्यर्थ नै होइत अछि। सभ एकटाकऽ विशेष गुण लऽ कऽ एहि धरतीपर अबैत अछि। जे काज आइ गोलू हाथी केलक ओ काज ने चिड़ै कऽ सकैत छल आ ने बानर आ ने मगरमच्छ।



गुणगर तरकारी

नमन बड़ खुरलुच्ची बेदरा छल। अपन बदमाशीसँ पूरा घरकेँ नचौने रहैत छल। ओकर कारण ई छल जे ओकर बदमाशीपर ओकर मायक सिवा कियो ओकरापर हाथ नै उठबैत छल। ओ जतेक बदमाश छल ओहिसँ कतेको गुणा बेसी सभक दुलारू। वैह दुलारमे ओ अपन सभ मनमानी करैत रहैत छल। सभसँ बड़का मनमानी तँ ओकर ई छल जे ओ बाड़ी-झाड़ीमे कोनो तीमन-तरकारीक गाछ नै होबय दैत छल। ओ बड़ मासुमियतसँ ई कहैत छल जे, 'हम एक्कोटा गाछकेँ नाश नै करैत छी, अपन दुलरुआ टुन्नाकेँ पेट भरैत छी।' नमनक एहि तरहक बातपर हुनकर बाबा हुनकर दादीसँ कहैत छेलखिन, 'खबरदार जे कियो हमरा पोताकेँ किछु कहब। हम तीमन-तरकारी हाटे-बजारसँ कीनिकऽ खायब। हमरा बाड़ीमे खाली अल्हू रोपू, हमर पोता वैह खाइत अछि तँ हम वैह उपजायब।'



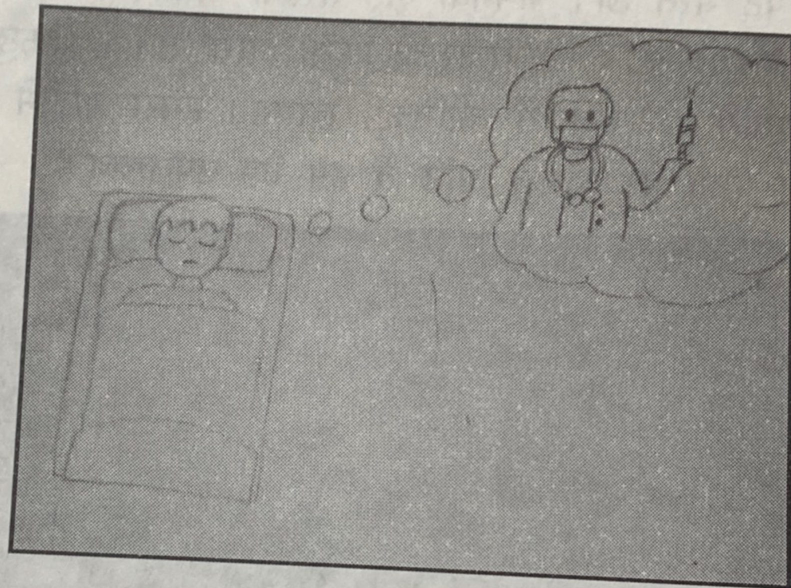
बाबाक बात सुनि नमन बाबा संग गलजोड़बाक' कानमे फुसफुसाइत कहलक, 'बाबा, हमरा ई तीमन-तरकारी नै नीक लगैत अछि तेँ ई सभटा गाछ उखारि देलहूँ।' एहि वार्ताक बाद बाबा-पोता ठहाका मारि हँसय लगैत छल।

एक दिन नमन स्कूलमे पछिला बेंचपर बैसल छल। मास्टर साहेब सभ बच्चाकेँ श्यामपट्टपरसँ हल कएल सवाल उतारऽ लेल कहलखिन। नमन बेर-बेर अपन आँखि मलैत छल तइयो ओकरा श्यामपट्ट परहक अक्षर साफ नै देखाइत छल। ओ अचम्भित छल जे ई की भऽ रहल अछि! मास्टर साहेब ओकरा आँखि रगड़ैत देखि लग आबि पुछलखिन, 'की भेल बउआ, ओंगही लगैए?'

—'मास्टर साहब, हमरा एतयसँ किछु नै देखाइत अछि।' नमन फेर आँखि रगड़ैत बाजल।

—'अच्छा तँ दू बेंच आगाँ आबि जाउ।' मास्टर साहेब ओकरा दू बेंच आगाँ बैसबैत बजलखिन।

—'मास्टर साहेब, आबो फरिछ नै देखैत छी।' नमन फेर आँखि



रगड़ैत बाजल।

मास्टर साहेब ओकरा सबसँ आगाँ बैसबैत कहलखिन, 'अच्छा, आब ठीक अछि ने?'

आब नमनकेँ सभ किछु साफ-साफ देखाइ लागल। ओ जल्दी-जल्दी अपन कॉपीमे श्यामपट्टपर लिखल सवाल उतारैत गेल आ हल सेहो करैत गेल।

मास्टर साहेब ई सभ देखि हुनकर बाबाकेँ एहि सम्बन्धमे सभ जानकारी दैत बजलखिन, 'भंडारी जी, एक बेर नमनकेँ आँखिबला डॉक्टरसँ देखा दियौ। एखन तँ शुरुआत अछि, कहीं बेसी देरी ने भऽ जाइ।'

नमनक बाबा साँझमे नमन संगे कलम टहलय लेल विदा भेला। रस्तामे बाबा नमनसँ तीमन-तरकारीक गुणक चर्चा करैत कहलखिन, जे तीमन-तरकारी नै खाइ छैक ओकरा पूर्ण संतुलित आहार माने प्रोटीन, विटामिन, वसा, मिनरल्स इत्यादि सभ नै भेटैत छैक जाहि कारण ओकर शारीरिक विकास रुकि जाइत छैक। ने ओकर कद बढ़ैत छैक, ने मानसिक विकास होइत छैक आ ने ओ स्वस्थ रहैत छैक। सभसँ बेसी असरि तँ आँखिक रोशनीपर होइत छैक। जाहिसँ बच्चाक डॉक्टर लग जा विभिन्न तरहक सुइया-दबाइ आ मोट-मोट चश्मा सेहो लगबय पड़ैत छैक।

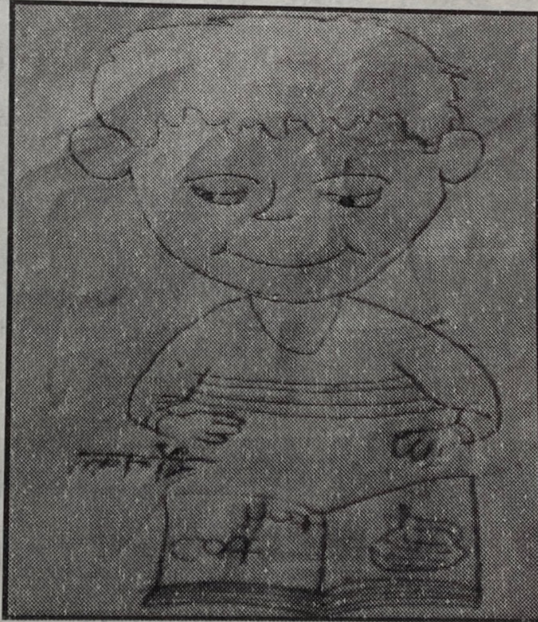
बाबासँ एहि तरहक बात सुनि नमन बहुत डरि गेल, जे हमहूँ तँ तीमन-तरकारी नै खाइ छी आ हमरो दूरक चीज देखाइमे परेशानी होइत अछि, सभ लेपायल-पोतायल लगैत अछि। गाछीसँ टहलि घर आबि नमन चुपचाप किछु खेने-पीने सुति गेल। बाबा नमनक व्यवहार देखि अनदेखा कऽ बस चुप रहलाह।

निसिभाग रातिमे नमन सपनायल जे डागडर बाबू बड़ मोट सुइया लऽ कऽ ओकरा आँखिमे देबय लेल ओकरा दिस आबि रहल अछि। ओ 'माय-माय'कऽ चिकरि उठल। ओकर माय ओकर पँजरे लागल सुतल छल। ओकरा कोरामे पँजियाकऽ 'बाबू-बाबू'कऽ सुताबय लगलीह। तखन नमनकेँ अपन सपनाक आभास भेल। मायक कोरामे ओ आँखि मुनि सुतबाक बहुत प्रयास केलक मुदा ई भयंकर सपना ओकरा फेरसँ सूतय नै देलक। ओ बस यैह सोचैत रहल जे आँखिमे कनियेटा किछु चलि जाइत अछि तँ बपहारि तोड़ि दैत अछि, फेर ऐहन मोट सूइया कोना बर्दास्त करब! एही चिंतामे प्रात भऽ गेल।

ई प्रात नमनक जिनगीमे सेहो नब प्रात आनलक। आब ओ सभ तरहक तीमन-तरकारी, साग, फल सभ खाइ लागल। किछु दिनमे सभ सामान्य भऽ गेल। आब नमन पिछलो बेंचसँ सभ किछु साफ-साफ श्यामपट्टपरसँ लिखय-पढ़य लागल।

अभ्यास

नमन आइ स्कूलसँ आबिक' फेरो पढ़य लेल बैसि गेल। नमनक एहि तरहक व्यवहारसँ ओकर माय बहुत अचम्भित भेल कियैक तँ ओ स्कूलसँ अबैत, रस्तेसँ कपड़ा उतारैत बस्ता पटकैत बिना किछु सुनने खेलाइ लेल दौड़ैत छल, मुदा आइ ओ एतेक समझदार भऽ गेल जे पढ़य लागल। ई तँ अचम्भित करयबला गपे छल। नमन अपन बस्तासँ अंग्रेजीक किताब निकालि धड़ल्ले पढ़ि रहल छल। माय बिन किछु बजने ओकरा एक टक्क देखि रहल छलीह, किछु कालक बाद नमन बाजल, 'मास्टर साहेब तँ एहिना कहि देलखिन जे बेर-बेर पढू सभ समझि जायब, हम एतेक बेर पढ़लहूँ तइयो किछु नै दिमागमे घूसल। माय कहू तँ ई गप साँच अछि कि मास्टर साहेब एहिना ओझराबैत रहैत छथिन। काल्हि अँग्रेजीक टेस्ट अछि, एहि बेर हम गंगेशबासँ बेसी नंबर आनिकऽ देखा देब।'



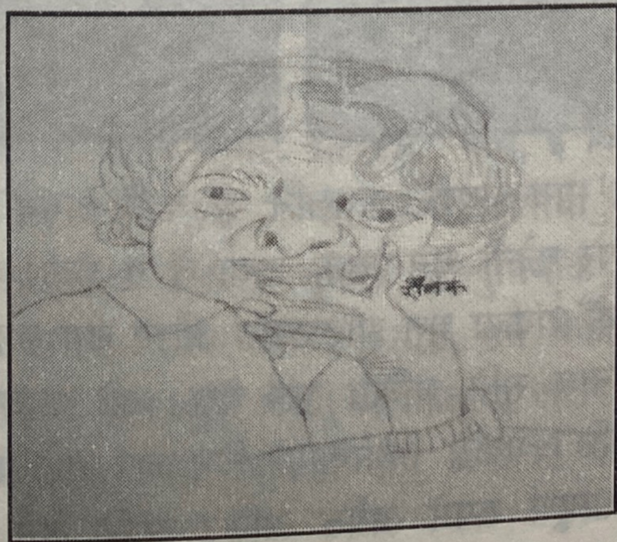
आब हुनकर मायकेँ किछु-किछु बात स्पष्ट भेल जे कल्हुका टेस्टमे गंगेशसँ बेसी नम्बर आनय लेल ई सभ भऽ रहल अछि। माय नमनक माथपर हाथ रखैत बुझबैत कहलखिन, 'प्रतियोगिता हमरा बढ़बैत अछि मुदा एहि तरहक हरबड़ीसँ पढ़लहो ज्ञान हेरा जाइत छैक। अहाँक मास्टर साहेब ठीके तँ कहलखिन जे बेर-बेर पढ़लासँ हम कोनो पाठकेँ नीक जकाँ समझि सकैत

छी। आइ हम अहाँकेँ अपन देशक महान वैज्ञानिक आ मिसाइलमैन नामसँ प्रसिद्ध व्यक्ति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलामजीक बात बतबैत छी।

एक बेर ओ एकटा पाठ हाथमे लऽ माय लग कनैत एलखिन जे हमरा ई पाठ समझमे नै आयल आ मास्टर साहेब फेरसँ ई पाठ नै समझौता, आब हम की करब? हुनकर माय अनपढ़ छलखिन मुदा बहुत विदुषी छलखिन। ओ कहलखिन जे बउआ अहाँ हमरा ओ पाठ पढ़िकऽ सुनाउ, हम अहाँकेँ समझा देब। ओ पहिने तँ अचम्भित भेलखिन जे कोना माय हमरा समझेथिन मुदा ओ आदर्श बेटा छलखिन, मायकेँ पाठ पढ़ि सुनाबय लगलथिन। एक बेर पढ़यपर माय कहलखिन अहाँ तँ सीधे दरड़ि देलहुँ, बहुत जल्दबाजीमे पढ़लहुँ, आरामसँ पढ़ू तखने हम समझब आ अहाँकेँ समझायब। ओ फेर पढ़लखिन। एहिना करैत माय हुनकासँ दस बेरसँ बेसी पढ़बैत रहलखिन, ओ पढ़ैत रहलखिन। ओ पाठ तँ हुनका नीक जकाँ समझमे आबि गेल संगहि ई सीख हुनका मिसाइल बनबैत काल सेहो याद रहनि। एहि कारण ओ मिसाइलमैन बनि अपन देशक नाम रौशन केलखिन।

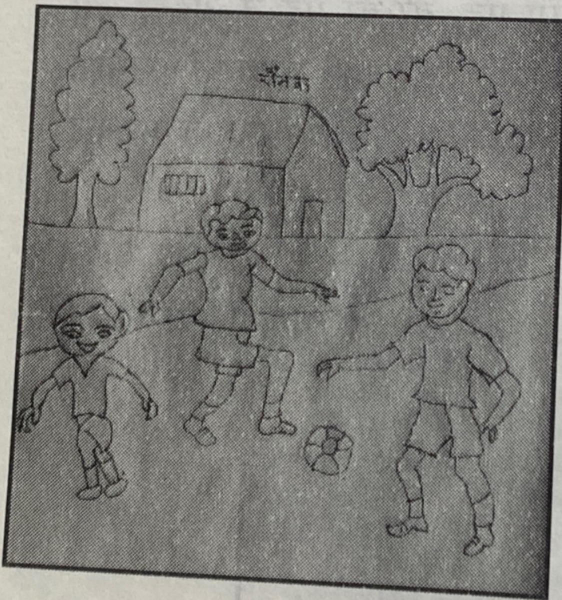
बउआ, अहूँ ओहि गम्भीरताक संग पढ़ू, बेर-बेर पढ़ू तँ अहूँकेँ ओ पाठ याद भऽ जायत आ एहनकऽ समझबय जे अहाँ दोसरोकेँ समझा सकैत छी। जँ अहाँ संयमसँ किताब संग बैसनाइ सीखि जायब तँ पढ़नाइ बहुत रुचिगर लागत आ किताब-कॉपी अहाँक संगी-साथी।'

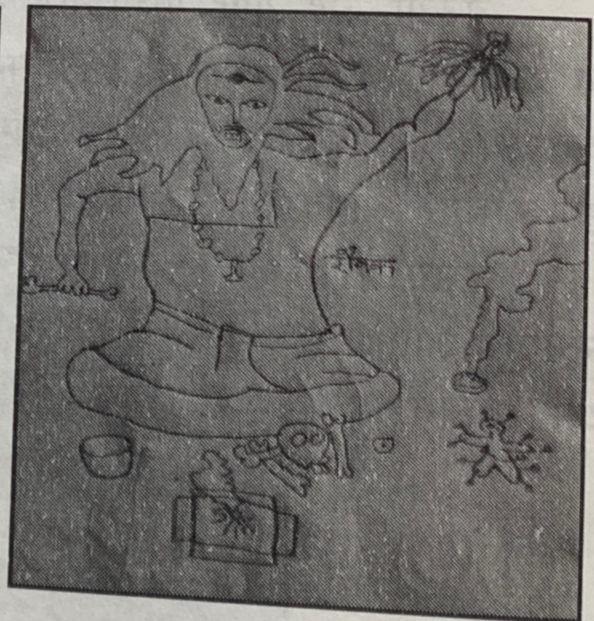
नमन अपन मायक बात बहुत गंभीरतासँ सुनि ओकरा अपन दिनचर्यामे शामिल केलथि आ फाइनल परीक्षामे सभ सहपाठीकेँ पाछू छोड़ि प्रथम स्थानसँ पास भेलाह।



किताबी भूत

अमन पढ़यमे बहुत कमजोर छल। ओ किताबसँ बहुत डेराइत छल। मास्टर साहेब जखन ओकरा पढ़य लेल कहैत छलखिन तँ ओ किताब खोलय लेल नै तैयार होइत छल। ओकर कहब छल जे हम जखन किताब खोलैत छी तँ ओहि किताबसँ सभटा अक्षर निकलि कारी-कारी भूत बनि घूमय लगैत अछि आ हाथ पकड़ि हमरा ओहि किताबमे खींचऽ लगैत अछि। ओ जोरसँ चिचिआइत किताब बंद करैत भगैत छल। ओकर एहि तरहक व्यवहारसँ सभ बहुत परेशान छल कियैक तँ अमन आब आठ बरखक भऽ गेल छल आ पहिले कक्षामे छल। मास्टर साहेब परेशान भऽ आब ओकरा सभ बच्चा संगहि बैसबऽ लेल नै चाहैत छलखिन। हुनका डर छल कि कहीं दोसरो बच्चा वैह ढाढस नै सीखि जाइक!





अमनक माय-बाबूकेँ लगलनि जे कहीं अमन सच तँ नै कहैत अछि! एकरा ऊपर कोनो भूत-प्रेतक साया तँ नै छैक! अपन यैह शंकाक कारण ओ अमनकेँ एकटा भूत झाड़यबला ओझा लग लऽ गेल। ओझा एहि किताबी भूतक नाम सुनि चकित भऽ गेल। ओ कहलक जे, 'ई बहुत झमटगर भूत अछि। एकरा अमावश्या दिन लऽ कऽ आयब ओहि दिन भूत-प्रेत अपन सम्पूर्ण रूपमे अबैत अछि। ओहि दिन ओ भूत पकड़ल

जायत!'

पाँच दिनक बाद अमावश्या छल। अमनकेँ फेर ओहि ओझा लग लऽ गेलाह। ओझा अपना घरमे किताबक ढेर लगौने छल आ एकटा बहुत बड़का शीशा सेहो रखने छल। ओझा अमनकेँ ओहि किताबक बीचमे बैसाक' पुछलक, 'कोन भाग जेबऽ, किताब दिस आ कि शीशा दिस?' अमन शीशा दिस घुसकिकऽ बैसि गेल। धाइम कहलक, 'हम अमनक भविष्य देखि रहल छी, हे भगवान एकर भविष्य बहुत कष्टकर अछि। जाहि संगी सभ संगे ई खेलाइ लेल एतेक परेशान रहैत अछि ओ सभ संगी एकरा देखि मुँह घुमा लैत छैक। स्कूलोमे मास्टर साहेब एकर नाम स्कूलसँ काटि देलनि।' धाइम अमनकेँ माय-बाबू दिस इशारा करैत बाजल, 'हम देखि रहल छी जे अमनकेँ अहाँ सभ असगर छोड़ि अपन छोट बचिया लेल किताब, बस्ता आ रंग-बिरंग कलम संगे खेलाइत छी। अमनकेँ सभ संगी आब ओकर संगी बनि गेल। अमनकेँ ई किताबी भूत एहिना जकड़ने रहत, नै छोड़त। माफ करब ई भूत बहुत ताकतवर अछि। हम एकरा नै पकड़ि सकब। आब अहाँ सभ घर जा सकैत छी।' ओझा हाथ जोड़ि अमनक माय-बाबूकेँ आग्रह करैत बजलखिन।

घर आबि अमन राति भरि नै सुतल ओ अपन संगी सभ संगे खूब खेलय चाहैत छल मुदा ओझाक भविष्यवाणी ओकरा विचलित कयने छल। ओ तखने निश्चय केलक कि आब हम केनो किताबी भूतसँ नै डरब, हिम्मतसँ ओकर सामना करब आ खूब पढ़ब। ओ तखने बल्ब जड़ा पढ़य लेल बैसि गेल। जखन ओकरा आगाँ अक्षर उड़य लगैत छल ओ जोर-जोरसँ पढ़य लगैत छल। होइत भिनसर ओकर डर सभटा भागि गेल आ ओ पढ़यमे मग्न भऽ गेल।

फेर एक दिन ओ अपन मायसँ कहलक, 'माय, ई किताबक अक्षर हमरा डरबैत नै छल ओ कहैत छल जे आ हमरा किताबी दुनियाँमे हमर संगी बन हम तोरा सुंदर-सुंदर खिस्सा सुनेबौ देश-दुनियाँक खबरि बतेबौ जाहिसँ तूँ ज्ञानी बनि सभक दुलारू बनबऽ। माय, हम बेकारे एकरा भूत समझि लेलहुँ। आब हम ई बात बूझि गेलहुँ जे किताबी अक्षर भूत नै, हमर भविष्य अछि, आब यैह हमर संगी अछि।' माय अमनकेँ पँजियाबैत खूब दुलार करय लागल।

भगजोगनी

रामा आ दुलारी दुनू लड़ैत छल। तखने ओकर माय पहुँचल आ दुनूक झगड़ा शांत करैत झगड़ाक कारण पुछलक तँ रामा बाजल–'माय, हम माटिक घर बनबैत छी जाहिपर दुलारी कहैत अछि जे हमहूँ बनायब, अहाँ कने दुलारीकेँ समझा दियौ। हम कहलियनि जे एखन अहाँ छोट छी नै होयत तँ देखियो कानय लागल आ सभटा माट्टि छिड़िया देलक।' रामा मायकेँ तखन घटित सभ व्यथा कहि देलक।

दुलारी सेहो मायकेँ कानि-कानि कहय लागल–'माय, भैया तँ कखनो हमरा अपना संगे खेलाइए नै दैत अछि! हरदम हम 'एखन बहुत छोट छी, यैह कहैत रहैत अछि। माय, हमहूँ भैया संगे माटिक खिलौना बनायब।' दुलारी हिचकैत बाजल।





माय दुनू बच्चाकेँ पुचकारिक' कहलखिन, 'आब आइ हम अहाँ दुनूकेँ एकटा खिस्सा सुनबैत छी। खिस्साक नाम सुनि दुनू भाय-बहिन मायक पँजरामे सटिक' बैसि गेल। माय खिस्सा सुनबय लागल–

'बजारसँ सटल एकटा बनमे एकटा चिड़ै अपन छोट-छोट चारिटा बच्चा संगे रहैत छल। भरि दिन माय चिड़ै अपन बच्चा लेल खानाक इन्तजाममे लागल रहैत छल। बजारमे भरि दिनक मेहनतक बादो ओकर आ ओकर बच्चाकेँ पेट नै भरैत छल। एक दिन ओ दानाक इंतजाममे गाम

जयबाक निश्चय केलक। अपन बच्चाकेँ ओ किछु खाना खुआ, ओकरा सभकेँ अपन देरीसँ अयबाक जानकारी दऽ कऽ विदा भेल। गाम पहुँचि ओ पेट भरिकऽ खाना खेलक आ भरि घोघ खाना अपन बच्चा सभ लेल सेहो नेने अबैत रहय मुदा रस्तामे अन्हार भऽ गेलैक जाहिसँ ओ रस्ता भटकि गेल। ओम्हर ओकर बच्चा सभ मायक इन्तजार करैत छल। सभटा बच्चा भूखसँ लहालोट सेहो होइत छल।

अन्हरिया रातिमे हवा भयाअसेन आवाजसँ सनसनाइत छल। सभ बच्चाकेँ डरसँ हलप सुखाइत छल। ओतहि गाछपर सटल भगजोगनी ओहि बच्चा सभकेँ एहेन डेरायल देखि ओकरा खोतामे गेल आ बच्चा सभकेँ ढाढस बन्हैत बाजल–'डरू नै, अहाँक माय एखने चलि आयत, ताधरि हम एतहि अहाँ सभ लग रहब।' ओहिमेसँ सभसँ छोट बच्चा भगजोगनी देहमे सटैत बाजल, 'हमरा एहि कारी रातिसँ बड़ डर होइत अछि मौसी।'

भगजोगनी अपन देहसँ निकलैत इजोत दिस इशारा करैत बाजल, 'घबराउ नै, भोर तक हम अपन देहसँ ई इजोत करैत रहब। अहाँ एहि इजोतकेँ निहारैत सूति रहू।' चारू बच्चा भगजोगनीक देहसँ निकलैत इजोतकेँ देखि सूति रहल। होइत भोर माय चिड़ैया आयल आ अपन बच्चाक सुरक्षित देखि हर्षित भेल। चुनमुन बाजल–'माय, भरि राति भगजोगनी मौसी अपन देहसँ इजोत देखा हमरा सभक ध्यान रखलक।' माय चिड़ैया भगजोगनीकेँ धन्यवाद दैत ओकर हौसलाक सम्मान केलक।

बउआ रामा, एहि कहानीसँ हमरा ई सीख भेटैत अछि जे कद्र छोट होइसँ केकरो हुब्बा छोट नहि होइत छैक। मजबूत हुब्बासँ एकटा छोट सन चुट्टी पहाड़ोपर चढ़ैत छैक।'

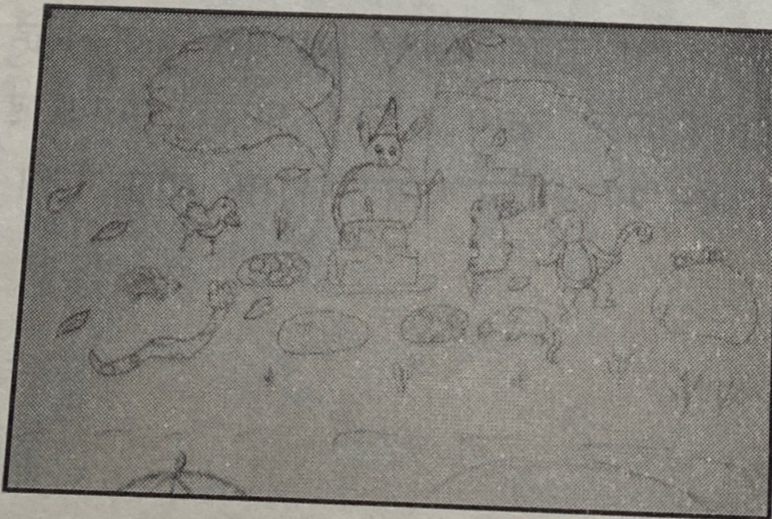
'माय, आइसँ दुलारियो हमरा संगहि खेलत। हम आब बूझि गेलहुँ कि काज करबाक प्रबल संकल्प हमरा योग्य बनबैत अछि।' मायक ई खिस्सा सुनि रामा बाजल आ दुनू भाइ-बहिन मायक कोरामे बैसि गेल।

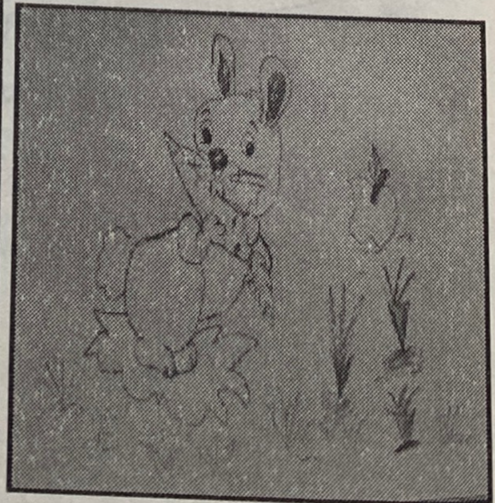
संतुलन

गोलू खढ़िया आइ बड़ उत्साहित छल, कियैक तँ आइ ओकर एक बरख पूरा भेलापर ओकर माय-बाबू पूरा गाछीक सभ खढ़िया, खिखिर आ बानर सभकेँ नोत देने छल। साँझमे केक काटि गोलूकेँ जन्मोत्सव मनाओल जायत। एहि जन्मोत्सवक तैयारी गोलूक घरमे बहुत जोर-शोरसँ कएल जा रहल छल। बहुत तरहक व्यंजन बनि रहल छल आ गोलूक मुँह बंद होइक नामे नै छल। जे-जे पकवान बनैत छल सभ पकवान ओ भरि बाटी लऽ कऽ खाइ लेल बैसि जाइत छल। गोलूक माय काजमे एतेक ओझरायल छल जे गोलूक एहि तरहक व्यवहारपर ध्यान नै देलक।

साँझ पड़ैत गोलू नबका कपड़ा पहिर तैयार भऽ दादीक कोरामे बैसि केक काटै लेल उत्सुक छल कि तखने अचानक ओकरा पेटमे मरोड़ उठल आ ओ दर्दसँ भूइयेंमे ओंघड़ाए लागल। सभ हक्का-बक्का रहि गेल कि आखिर गोलू एहि तरहक व्यवहार कियैक करैत छैक, ओकरा की भेल? गोलूक माय कोरामे उठा पुचकारिकऽ पुछलीह, 'की भेल बउआ, किछु लेब?' दर्दसँ व्याकुल गोलू 'पेटमे दरद, पेटमे दरद' कहि लारू-बातू भऽ गेल।

दादी खढ़िया दौड़ल। भनसाघरसँ जमाइन आ बिटनूनक डिब्बा लऽ एक गिलास गरम पानि केने आयल आ गोलूकेँ खियाक' पानि पियबैत बजली—'आउ हमरा कोरा, एखने दर्द भागि जायत।'





गोलू बिटनून-जमाइन फाँकि गरम पानि पीलक आ दादी कोरामे लटुआकऽ पड़ि रहल। किछु कालमे खूब रास उल्टी केलक, जाहिमे भरि दिनक खेलहा, बिन चिबेलहा सौंसे-सौंसे अधखिजुआ खायल खाना निकलल। गोलू जल्दी खयबाक चक्करमे खानाकेँ ओहिना घोंटने गेल छल। उल्टीक बाद गोलूक पेटक दर्द तँ ठीक भऽ गेल मुदा ओकरा देहमे उछल-कूद करबाक शक्ति नै रहल। ओ दादी कोरामे सूति रहल। जाहि केक काट' लेल ओ एतेक दिनसँ उत्साहित छल, ओहो केक नै काटि सकल। ओंघालेमे माय खाढ़िया ओकरा हाथे केक कटबा देलक जकर ओकरा किछ भानो नै भेलै।

जखन गोलूक आँखि खुजल तँ पार्टी खत्म भऽ गेल छल आ सभ मेहमान खाना खा अपन-अपन घर चलि गेल छल। गोलूक एहि अवसरपर ऐना बीमार होयबाक बहुत दुःख छल ओ भगवानकेँ एहि लेल दोख दऽ रहल छल कि तखने दादी खढ़िया आबि गोलूकेँ कोरामे उठा बड़ प्रेमसँ कहलक–'बउआ, एहि संसारमे घटित कोनो घटना आकि दुर्घटना हमरे रोपल बिया होइत अछि, ओहिमे भगवानक कोनो दोष नै।'

–'दादी, भगवाने तँ हमरा पेटमे दर्द करौलक जाहि कारण हम ने केक काटि सकलौं आ ने अपन जन्मदिवस मना सकलौं तँ दोषी वैह छथि ने!' गोलू बड़ मासुमियतसँ दादीकेँ कहलक।

दादी हँसैत बजली–'नै बाबू, एकर कारण भगवान नै, अहाँ स्वंय छी।'

–'मुदा कोना हम छी दादी?' गोलूकेँ फेर वैह मासूम सवाल!

–'बउआ, कहबी छैक जे अन्न जान बचबै छैक, वैह अन्न जान लैतो छैक। तेँ एहिमे संतुलनक आवश्यकता अहम छैक। अहाँ अन्नक संतुलनकेँ नै बूझि, भरि दिन खाइत रहलियै आ संगे उछल-कूद सेहो करैत रहलियै, जाहिसँ ओ पचि नै सकल।

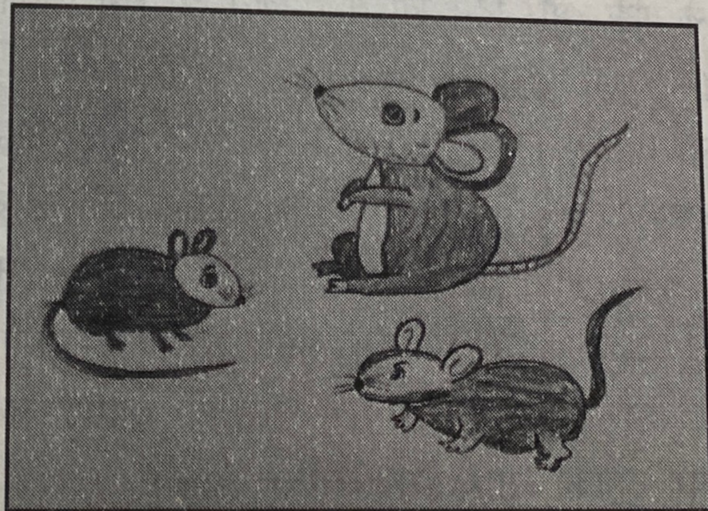
जेना एहि फुकनामे बेसी हवा फुकबै तँ फूटि जाइत छैक। तहिना हमरा पेटोक एकटा क्षमता अछि। जखन ओहिमे बेसी खाना देबै तँ एकटा दवाब पड़ैत छैक। जाहि कारण पेटमे दर्द आ उल्टी होइत छैक।'

गोलू दादीक बात ध्यानसँ सुनैत बाजल–'आगाँसँ हम पेट आ अन्नक बीच संतुलन राखब आ सभ उत्सवक आनंद लेब। सभ खढ़िया गोलूक बातपर ठहाका मारि हँसय लगैत अछि।

निःस्वार्थ प्रेम

कारी घनगर मेघ एहन उमड़िकऽ आयल जेना लागल जे आइ पूरा गाम डूबि जायत! सभ कियो हाय-हायकऽ जरना-काठी घर करैत छल। गीता सेहो गठुल्ला मचानकेँ पन्नीसँ झाँपय लागल कि देखलक ओतहि मचानक कातमे बहुत मोट मूसक बिल अछि। ओहि बिलसँ छोट-छोट मूसक बच्चा बहराइत छैक आ किछु हलचल सुनि फेर ओ जी-जान लऽ बिलमे घुसि जाइत छैक। गीताकेँ ओहि मूसक बच्चाकेँ डेरायल चेहरा देखि दया आबि गेलै। ओ एक बेर मेघ दिस देखैत छल आ दोसर ओहि मूसक बिहरि दिस।

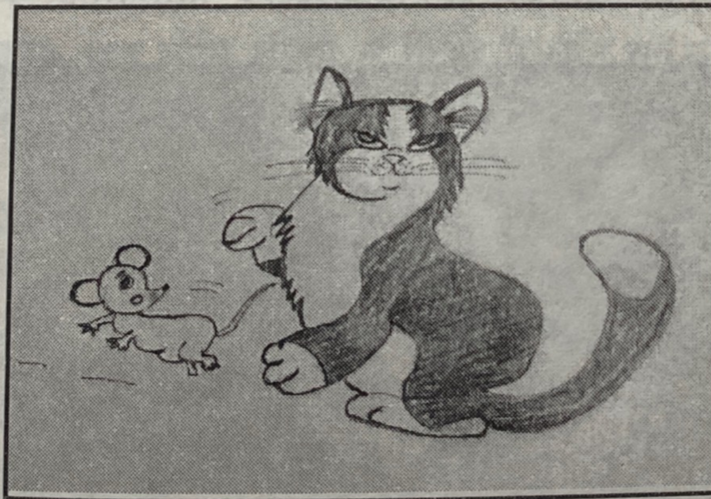
गीता कने ठमकिक' किछु सोचलक आ जल्दी-जल्दी पथियामे माटि कोड़िक' भरय लागल। फेर ओहि माटिकेँ मूसक बिलसँ एक हाथक दूरीपर उझलि चारू दिससँ बान्ह जकाँ बना देलक। पानि बूँदा-बुँदी शुरु भऽ गेल। तइयो गीता मूसक घरमे पानि नै घूसैक, ताहि लेल बान्हक काते-कात करची गाड़ि पन्नी लटका देलक कि तड़तड़ाक बरखा होब' लागल। पूरा बाड़ी जलमग्न भऽ गेलै मुदा मूसक घर बाँचि गेल आ सभटा बच्चा सेहो सुरक्षित छल। बरखा रुकिते गीता एक मुट्ठी धान लऽ कऽ ओहि बिलक मुँहपर राखि देलक। तुरंते मूसक बच्चा सभटा लप-लप कऽ धान बीछि अपन घर लऽ गेल। ई देख गीता बहुत खुश भेल। ओ प्रायः किछु ने किछु खाइ लेल ओहि मूसक बिलक ऊपर रखिते रहैत छल।



किछ दिनक बाद गीताक घरमे एकटा बिलड़ा आबय लागल जे बहुत उपद्रव मचौने छल। कखनो भरल तौला-कराहीमे मुँह घुसियाबैत छल तँ कखनो सभटा दूध पीबि लैत छल। ओहि बिलड़ासँ गीता बेसी परेशान छल मुदा ओ पकड़ियेमे नै अबैत छल। गीताकेँ ऐना परेशान देखि मूस आ ओकर बच्चा सभ बिलड़ाकेँ पकड़बाक एकटा योजना बनौलक। जहिना बिलड़ा आयल कि मूसक बच्चा आ मूस सभ ओकरा आगू-पाछू करय लागल।

बिलड़ाकेँ एक संगे पाँचटा मूस देखि मुँहसँ लेर चूबि गेल आ पाँचू मूसकेँ पकड़िकऽ घोंटि गेल। ओ बुझलक जे कहीं एक्को टा भागि नै जाय तँ ओ सभकेँ घोंटि गेल। सभ मूस बिलड़ाकेँ पेटमे घुसि ओकरा काटऽ लागल कि बिलड़ा अँगनामे अपन पेट रगड़ैत-रगड़ैत बेसोह भऽ गेल। ओकरा छटपटाइयोकऽ ताकति नै रहल। ओ फकफकाइत ओतहि पड़ि रहल कि पाँचो मूस ओकर पेटकेँ फाड़ैत बाहर निकलल आ सब पेटसँ निकलिते अपना बिलमे घूसि गेल।

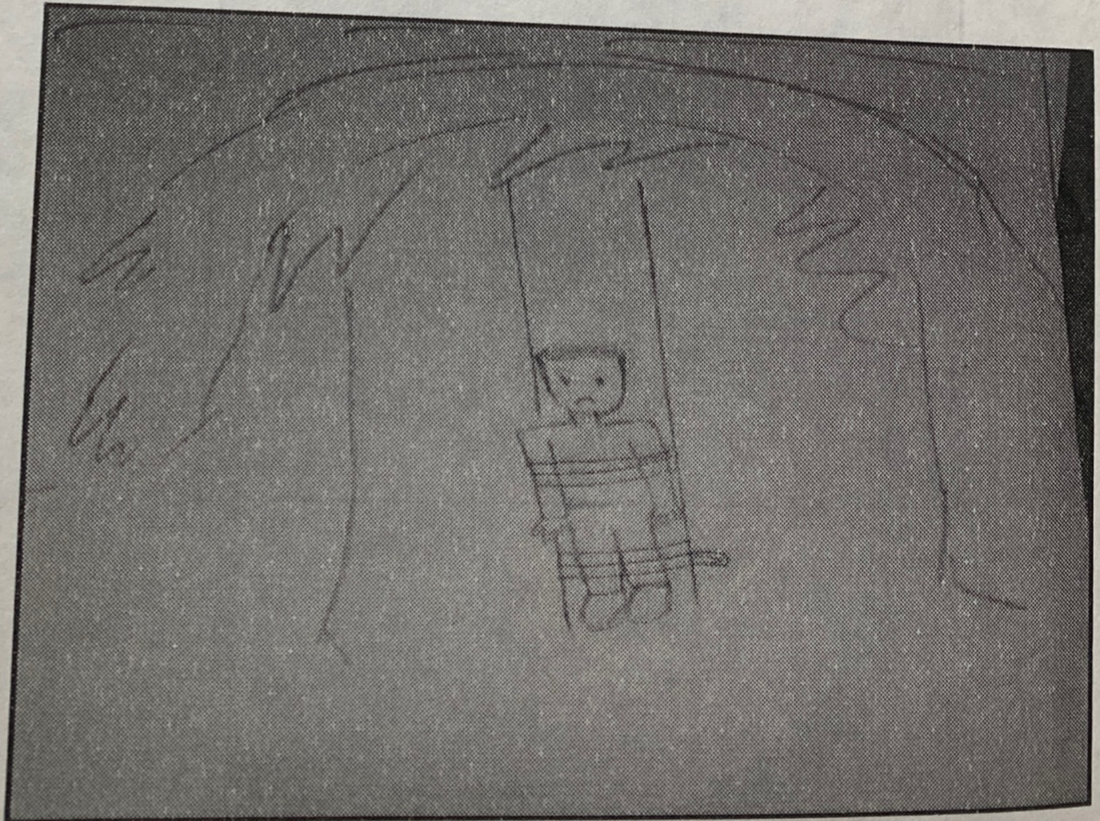
दुनियाँमे जतेक जीव ,सभ अपनत्वक भाषा बुझैत अछि। हमरा द्वारा कएल एहसान ओ सदिखन यादि रखैत अछि।



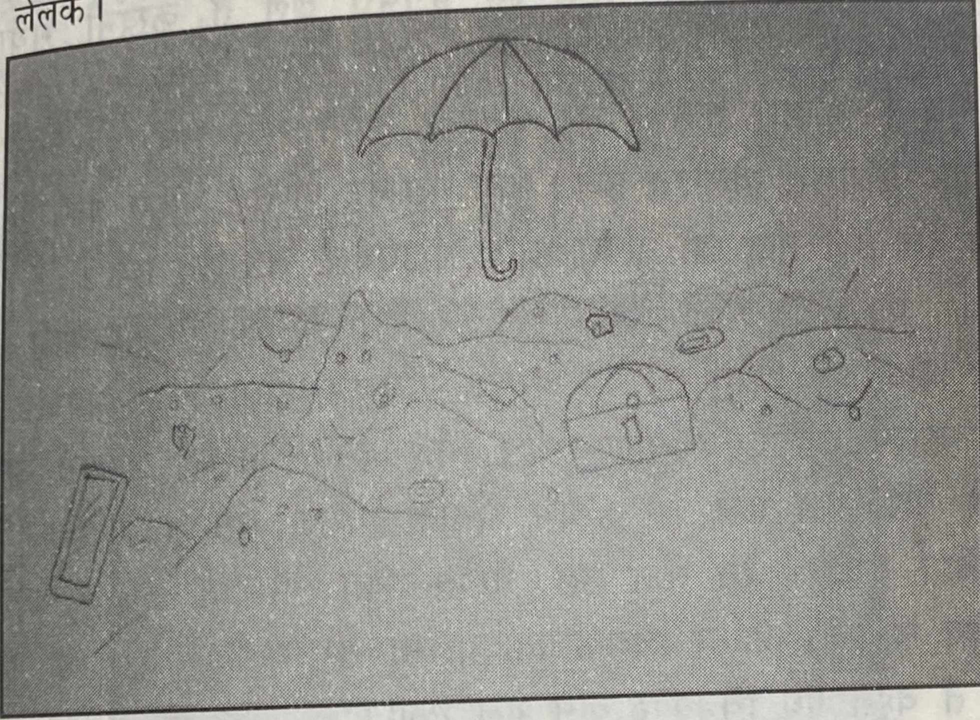
जादुइ छत्ता

नमन एक दिन दुपहरियामे असगर खेला रहल छल कि तखने एकटा छत्ता उड़ियाइत आयल आ नमनक आगाँ खसि पड़ल। छत्ताक सुन्दरता देखि नमन लपकिकऽ छत्ता उठाकऽ खोललक कि छत्तासँ आवाज आयल, 'माँग, की मँगै छेँ ? तोँ जे मँगबेँ वैह पयबेँ ! हम तोहर दूटा इच्छा पूरा करबौ।'

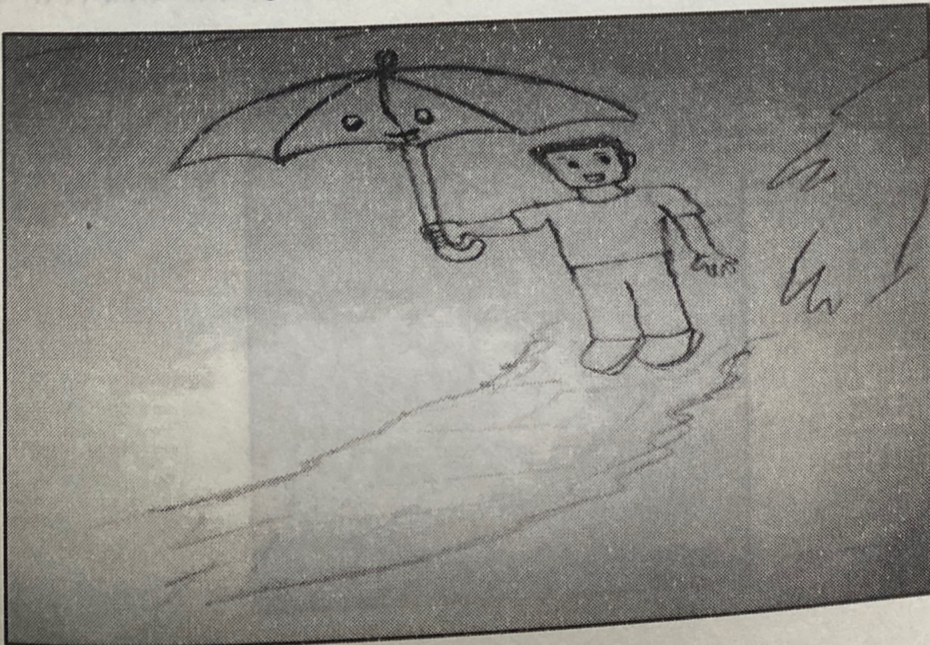
नमन पहिने तँ डरि गेल फेर हिम्मत बान्हि बाजल, 'अच्छा ठीक छै, चारिटा बिस्कुटक डिब्बा लाउ।' तुरत नमनक हाथमे चारिटा बिस्कुटक डिब्बा आबि गेल। फेर छत्तासँ आवाज आयल, आब तोहर एकटा इच्छा आर बाँचल छौ, सोचि-समझिकऽ माँग।' नमन छत्ता नेने बाबा लग गेल तँ ओ कहलखिन, 'अपार ज्ञान माँगि लिअ।' दादी कहलखिन, 'निरोग काया माँगि लिअ।' माय कहलखिन, 'धन माँगि लिअ' आ बाबू कहलखिन, 'अपार शक्ति माँगि लिअ।' सभक बात सुनि नमन कहलक, 'छत्ता, हमरा अपार धन दिअ।' देखैत-देखैत नमनक घरमे धनक अम्बार लागि गेल। सोना-चाँदीक चमकसँ कतेको गाम प्रकाशवान भऽ गेल।



ओहि प्रकाश संगे छत्ता नमनक हाथसँ बिला गेल। नमनक पूरा परिवार धन देखि बहुत खुश भेल। ओहि धनसँ सभ अनेकानेक सपना गढ़ऽ लागल। होइत साँझ नमन घरपर लखिमा डाकू, जे ओहि क्षेत्रक इनामी डाकू छल, हमला कऽ देलक आ नमनक बाबाकेँ जख्मी कऽ सभटा धन राति भरि उघैत रहल आ नमनक पूरा परिवारकेँ एकटा खुट्टासँ बान्हि सभ किछु लूटि लेलक।



नमन अपन लुटैत घरकेँ देखि मने-मन कहलक जे, 'आइ बाबाक बात मानि ज्ञानक धन माँगि लीतहुँ तँ कियो नै लूटि सकैत छल। लालचक कारणे फकीर बनि गेलहुँ।'

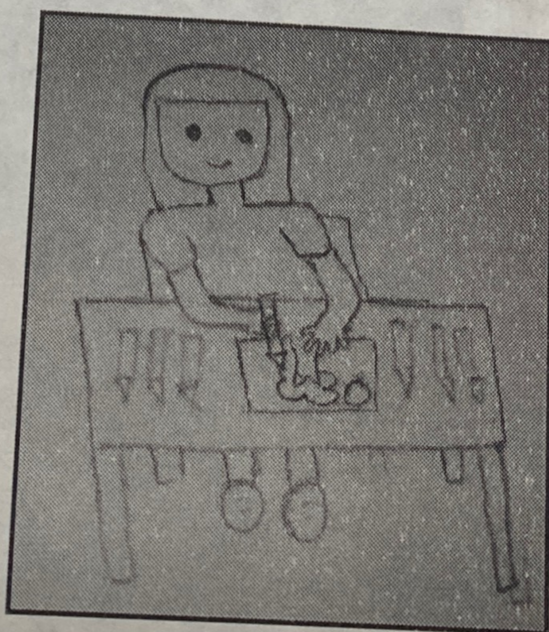


चित्रकारी

मिस्टी अपन भैयाक रंग-बिरंगा पेन्सिलसँ खेलाइत रहैत छल, कखनो देबालपर घसि नाक-मुँह बनबैत छल तँ कखनो भैयाकेँ किताब-कॉपीकेँ रंगि दैत छल। ओकर एहि तरहक व्यवहारपर माय-बाबू आ भैयासँ ओकरा कतेको बेर फटकार लगैत रहैत छल, मुदा फेर ओ भाइएक पेन्सिलसँ खेलाइत छल। माय नब-नब पेन्सिल भाइए जकाँ ओकरो आनि दैत छल मुदा ओ अपन छोड़ि भाइएबला लऽ लैत छल।

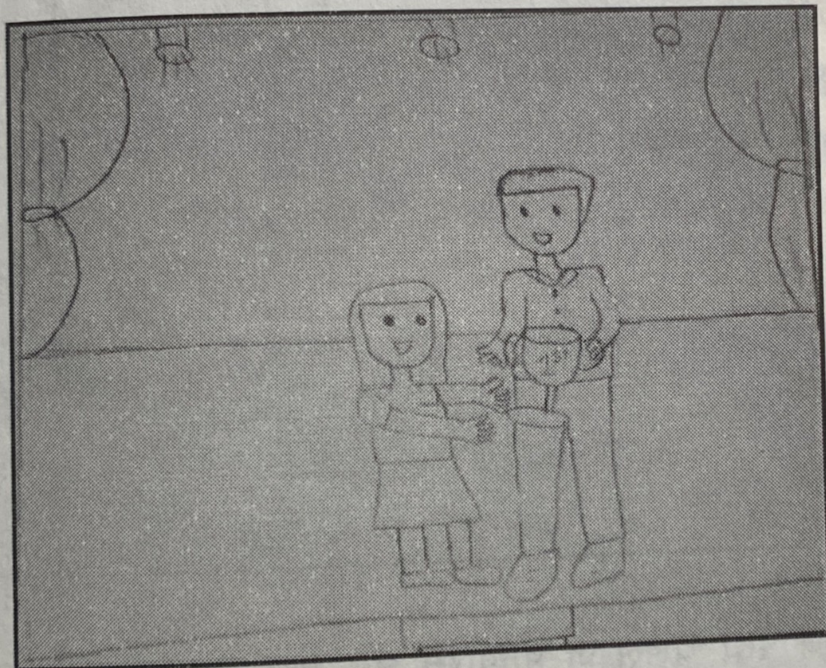
एकर कारण ई छल जे ओकर भैया बहुत नीक चित्रकारी करैत छल। ओकरा ई होइत छल जे भैयाक पेंसिलमे कोनो जादुइ शाक्ति अछि जाहि कारणे ओ एहन सुन्दर-सुन्दर चित्र बनबैत छथि। ई बात ओकरा मोनमे बैसि गेल छल ओ हरदम भैयाक पेंसिल लऽ भाइए जकाँ चित्र बनयबाक प्रयत्न करैत रहैत छल। देखैत-देखैत मिस्टियो बहुत सुन्दर चित्र बनाबय लागल। ओकर चित्रकलाक प्रशंसा सगरो होइत छल आ हुनकर भाय तँ बहुत पैघ चित्रकार बनि गेल छला।

एक बेर मिस्टीकेँ मधुबनी जिलामे चित्रकला प्रतियोगिता लेल बजाओल गेल। मिस्टी अपन बाबू संगे ओहि कार्यक्रममे पहुँचैबला छलीह कि रस्तेमे हुनकर बैग छिना गेल, जाहिमे ओकर भायक रंग-बिरंगा पेंसिल



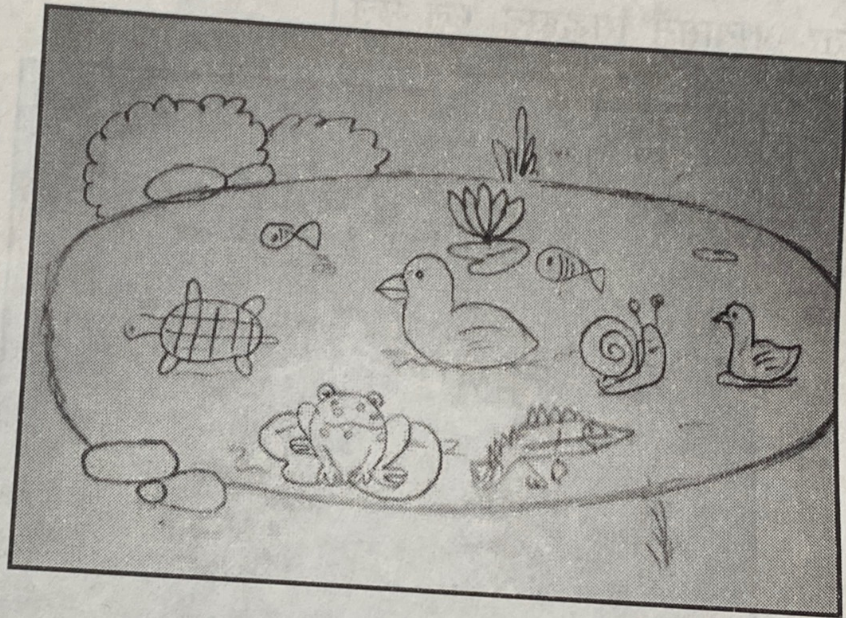
सेहो छल। आब मिस्टी अपन बैगसँ बेसी ओहि पेंसिल लेल नोरे-झोरे कानय लागल। बाबू ओकरा बहुत समझा-बुझा एकटा नबका ओहने पेंसिल देलखिन मुदा ओ ओहिसँ चित्र बनाबय लेल तैयार नै छल।

तखन बाबू कहलखिन जे, 'एक बेर अहाँ अपन अँगुरीपर विश्वास कऽ चित्र बनेनाइ शुरु करू, देखब प्रथम विजेता अहीं होयब। एखन मिस्टीकेँ अपन बाबूक बात माननाइ मजबूरी छल। ओ बाबूक बात मानि चित्र बनेनाइ शुरु केलक आ समयसँ पूर्ण केलक। किछु काल बाद विजेताक नामक घोषणा भेल जाहिमे मिस्टी पहिल विजेता बनल, संगहि मिस्टीक भ्रम सेहो टूटल जे कलाकारी भैयाक पेंसिलमे नहि, हुनकर अपनहि हाथमे छल, जे निरंतर अभ्याससँ सिद्धहस्त भेल छल।



पोखरिक सभा

आइ पोखरिमे बड़ हिलकोर मारैत छल, एगो बुदबुदाहटिसँ पूरा पोखरि सनसना रहल छल। माछ सभ सेहो छिलमिलायल फिरैत छल। काछु बेर-बेर पोखरिक कछरिमे आबि पड़ि रहैत छल कि बेंग एक्के सुरमे टरटराय लगल जेना खतराक बिगुल बजल होइक। बेंगक टर्र-टर्राहटिसँ पूरा पोखरि दलमलित भऽ गेल।



तब पता चलल जे पोखरिमे बेंग सभ अपातकालीन सभा बजौलक अछि आ बत्तखकेँ मुजरिम कहि सभा मे ठाढ़ कएल गेल। बत्तख केँ किछु समझेमे नै अबैत छल जे हमरासँ कोन गुनाह भेल...

राजा मगरमच्छ सभाकेँ संबोधित करैत बेंगसँ अपातकालीन सभाक कारण पुछलक तऽ बेंग बाजल– 'महाराज, पूरा पोखरिक जीव सर्दी-जुकामसँ ग्रसित भऽ गेल। जेम्हर सुनू तेम्हरे खों-खोंक ध्वनि सुनाइत दैत अछि। हम सभ गोटे तऽ एहि पानि मे रहैत छी। ई बत्तखे सगरे बौआएल फिरैए। तँ यैह बत्तख कतौसँ ई बीमारी आनि भरि पोखरि पटेलक जाहिसँ पूरा पोखरि बीमार पड़ि गेल।' मगरमच्छ बेंगक बात ध्यानसँ सुनलक आ बत्तख दिश ताकैत बाजल–'बत्तख, अहाँकेँ किछु अपन

सफाइमे कहैक अछि?'

बत्तख हाथ जोड़ि बाजल, 'महाराज हम चकित छी। जँ हमरे कारण पूरा पोखरि बीमार पड़ि गेल तऽ हमरा कहाँ एगो छिक्को अबैए! हम तऽ पूरा स्वस्थ छी आर किछु नै कहब, हम फैसला सभापर छोड़ि दैत छी।

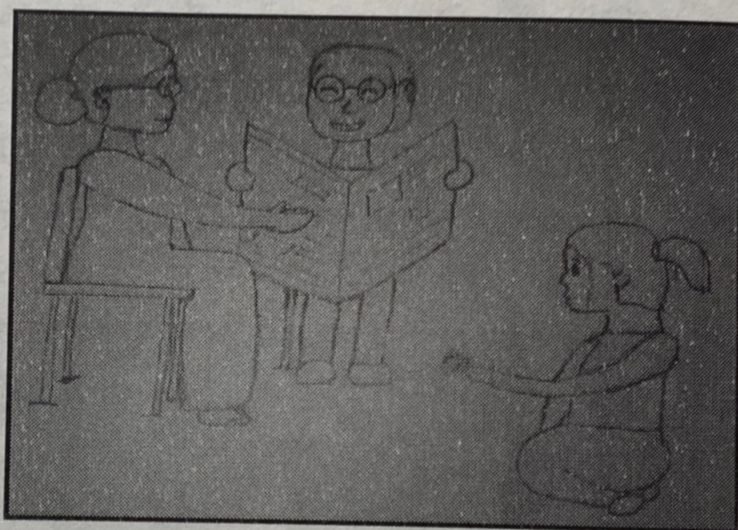
सभामे बैसल उद्‌बिलाड़ बाजल, 'महाराज, जँ बत्तख स्वस्थ अछि तऽ ई कोना संभव भऽ सकैत अछि जे ओ पूरा पोखरिमे सर्दी-जुकाम पटौलक! हमरा एतेक बड़का घटनाक पाछू कोनो मनुखक हाथ लागि रहल अछि। हमर आग्रह अछि जे बगुला भाइसँ पूछल जाय जे एकर कारण की अछि?

मगरमच्छक आदेशपर सभा बगुलाकेँ बजाओल गेल, तब बगुला बाजल जे 'चारि दिन पहिले दरबारमे दालि-भातक भोज छल जाहिमे बचलाहा तीमन-तरकारी सभ पोखरिमे डोले-डोल उझलल गेल, जाहिसँ पूरा पोखरि बीमार पड़ि गेल।' बगुलाक बात सुनि बत्तखकेँ छोड़ल गेल। मनुखक अइ कृत्यपर पोखरिक जीव छटपटाइत रहि गेल।



चुक्का

मानविकेँ चुक्कामे पाइ रखनाइ बड़ नीक लगैत छल, ओ घरक सभ सदस्यसँ सभ दिन एक-एक रुपया लैत छल आ अपना चुक्कामे खसा दैत छल। एक दिन मानवि जखन बाबा लग अपन चुक्का लऽ पहुँचल तँ बाबा अपन कुरताक जेबी टटोलैत बजलखिन—'आइ तँ कतौ एक्कोटा चौवन्नियो नै झनझनाइत अछि, ई लिअ दस टाका, आब दस दिन हमरासँ पाइ नै माँगब।'



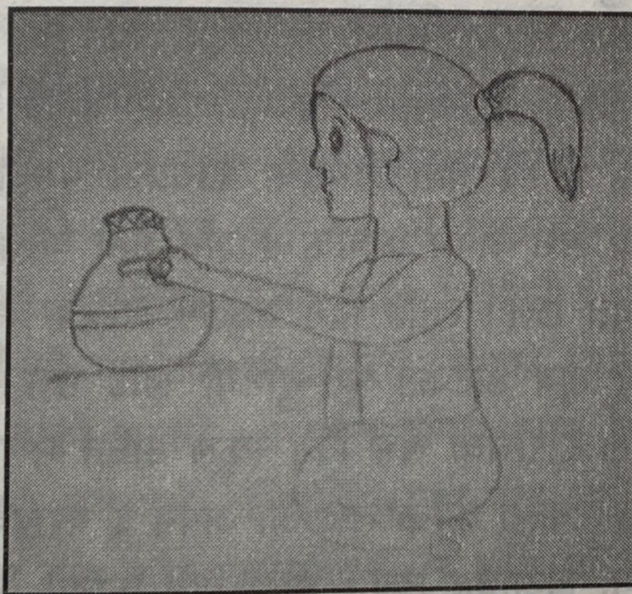
मानवि बाबाक दस टाका घुरबैत बजली, 'नै बाबा, हमरा झनझनायबला पाइ चाही, ओहि पाइसँ हमर चुक्का खुश होइत अछि, आ मधुरगर अबाज सेहो निकलैत अछि। अहाँक ई कागज बला नोट चुक्काक पेटमे जाकऽ सुति रहैत अछि आ हमरा संगे खेलेबो नै करैत अछि।' मानविक एहि तरहक बातपर बाबा आ दादी दुनू ठहाका मारि हँसय लगलाह। दादी ओकरा एक मुट्ठी सिक्का आनिकऽ देलखिन। मानवि सभटा पाइकेँ एक-एककऽ चुक्कामे खसबैत गेली।

मानवि स्कूलसँ आबि पहिने अपन चुक्काकेँ उठा ओकर भारक हिसाब लगबैत रहैत छली आ एक बेर झनझनाकऽ खुश भऽ जाइत छली।

एक दिन मानवि चुक्का पँजियाकऽ बैसल छली। माय पुछलखिन जे 'एहि पाइसँ अहाँ की करब? आब तँ चुक्का बड़ भारी भऽ गेल। मायक

प्रश्नपर मानवि बाजल, 'माय एहि पाइसँ हम बाबाक चश्मा बनायब। बाबाक चश्मा फूटि गेल अछि। ओ बाबूक डरे नै कहलखिन। जखन हमर चुक्का पूरा भरि जायत तँ हम सभटा पाइ निकालि बाबाकेँ दऽ कऽ कहबनि जे दोसर चश्मा बनबा लिअ।' मानविकेँ गला लगबैत माय कहलखिन, 'बाबाक चश्मा एखने हम बनबा दैत छी।'

दादी माय-बेटीक बात ठाढ़ भऽ सुनैत रहथिन, ओ मानविकेँ दुलार करैत कहलखिन जे 'जहिना अहाँ माटिक चुक्कामे पाइ भरलौं तहिना नित अपन दिमागक चुक्कामे सेहो नीक विचार, नीक बात सभ भरलौं। अहाँक ई ज्ञानक चुक्का एहिना नित भरैत रहय।' मानवि किछु नै बुझलक जे माय-दादीक आँखि कियैक नोरा गेल। ओ दादीक कोरामे आर सन्हिया गेल।

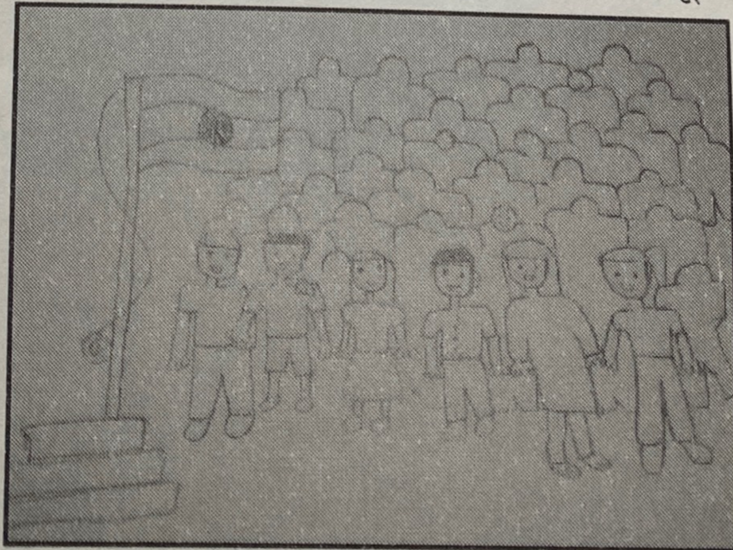


माँ भारती

आइ स्कूलमे गणतंत्र दिवसक कार्यक्रम लेल मास्टर साहेब सभ बच्चाकेँ स्कूलक प्राँगणमे बजेलखिन। सभ बच्चा बहुत उत्साहित छल कियैक तऽ मास्टर साहेब सत्याग्रहक झाँकी लेल किछु बच्चा सभक नाम चयनित करयबला छलखिन। किनको रानी लक्ष्मीबाई लेल चुनल गेल, किनको रजिया बेगम लेल, किनको चंद्रशेखर आजाद लेल तँ किनको भगत सिंह लेल। लखनाक पेट हरदम पाँजरेमे सटल रहैत छल तँ मास्टर साहेब हुनका महात्मा गाँधी बनयबाक लेल चुनलखिन। सातटा बच्चाकेँ सात शहीद लेल आ बहुत रास बच्चाकेँ सैनिक बनयबाक लेल नामक घोषणा कएल गेल।

सभकेँ ओही भेष-भूषामे अपना घरसँ अबैक लेल सेहो कहल गेल। बच्चा सभक ई स्वतंत्रता दिवसक कार्यक्रम पसंदीदा कार्यक्रम रहैत छल, स्टेजपर बच्चा सभ अपन कलाक प्रदर्शन सेहो करैत छल आ पुरस्कृत भऽ खुश भऽ जायत छल। ओहि दिन स्कूलमे भोजक आयोजन रहैत छल जाहिमे बच्चा सभ खूब डटिकऽ पूरी-बुनियाँ खाइ छल।

आठ बरखक रधिया सभ दिन स्कूल अबैत छल मुदा पढ़ै लेल नै, अपन मायक टहल-टिकोरा करैक लेल आ अपन दू बरखक भाइकेँ लटकौने सभ बच्चाकेँ खाना खुआबैत छल। ओहो दिन कातमे ठाढ़ भऽ देखि रहल छल आ मने-मन उत्साहित भऽ रहल छल जे काल्हि स्कूलमे बहरूपियाबला

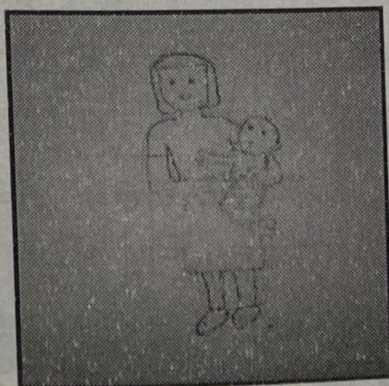


खेल खेलल जायत। रधियाक माय-बाबूकेँ भरि दिन खेनाइ बनबैमे लागि जाइत छल। रधिया अपना भाइकेँ डाँड़पर लटकौने घरक काज आ स्कूलक सेहो किछु-किछु काज कऽ लैत छल। गरिबी आ मजबूरी ओकरा उमेरसँ पहिने पैघ बना देने छल। मास्टर साहेब रधियाकेँ काल्हि सकाले स्कूल अबैक लेल कहने छलखिन। से ओ मायकेँ कहि सूति रहल छल।

भोरे रधिया सकाले उठि नहा-धोकऽ तैयार भऽ अपन बउआकेँ सेहो गाम जायबला कपड़ा पहिराकऽ तैयार कएलक आ माय संगे स्कूल आबि गेल। बच्चा सभ सेहो अपन भेषमे तैयार भऽ स्कूल पहुँचल। दुनू माय-बेटी आँच जोड़ि पहिने अल्लू चढ़ेलक आ किछुए कालमे एक कराह अल्लू-कोबीक तरकारी बना राखि देलक। रधिया माय आटा सानलक ओ पूरीकेँ गोली काटि राखने गेल ओ सभटा काज जल्दी खत्म करैक लेल चाहैत छल, ताकि स्कूलक कार्यक्रम देखि सकय।

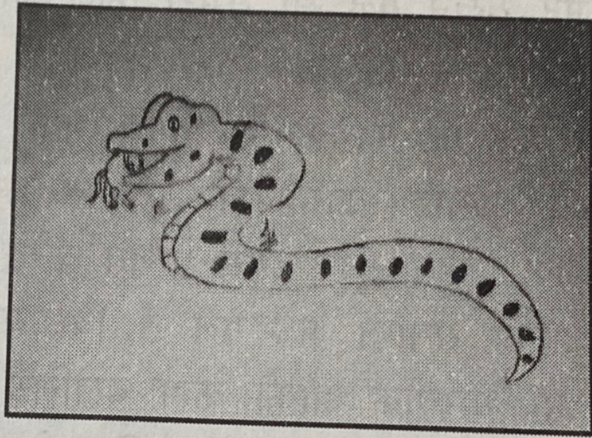
मास्टर साहेब एहि कार्यक्रममे अतिथिगणकेँ एहि गामसँ आ किछु दोसरो गामसँ बजौने छेलाह। कार्यक्रमक शुरुआत कयल गेल। सभ बच्चा अपन-अपन झाँकीकेँ बहुत सुंदर ढंगसँ प्रस्तुत करैत गेल

जखन झाँकी समाप्त भऽ गेल तँ विधायकजी मास्टरसाहेबकेँ कहलखिन, 'यौ माँ भारतीक झाँकी कहाँ देखेलियै!' आब सभ मास्टर अवाक! कियैक तँ माँ भारतीक झाँकी दिस किनको ध्याने नै रहै जे कहुना बनाओल जाइत! तखने बातकेँ सम्हारैत डॉक्टर बाबू अपन कुर्सीसँ उठैत कहलखिन जे 'अपन बउआकेँ पँजियेने कोनमे ठाढ़ भऽ सभ देखि रहल।' ओ ओकरा स्टेजपर ठाढ़ करैत बजलखिन—'ई छथि माँ भारती'। रधियाकेँ किछु नै फुरेलै। ओ अपन बउआकेँ डाँड़पर लटकेने चुप छल कि विधायकजी उठि ठाढ़ भेलखिन आ थपड़ी बजा रधियाक स्वागत करैत कहलखिन, 'हँ सच कहलौं, यैह तँ छथि असली हमर माँ भारती!'



साँपक यारी

गणेश एक दिन अपन दादी संगे खेतमे गोला फोड़ै छल आ कि खेतक बीचमे ओ आन साँपसँ नम्हर आ मोटगर केंचुआ देखलक। ओ दादीकेँ केचुआ देखबैत बाजल, 'दादी देखियौ, कतेक नम्हर फुक्का।' दादी केचुआ देखि गणेशकेँ अपना दिस खिचैत डेरायल बजली, 'भागऽ एतऽसँ, ई तँ कोनो बड़का अजोध साँपक केचुआ छियै।' दादी तखने गणेशकेँ घर आनि लेलक।



गणेशकेँ साँपसँ डर नै होइत छल, मुदा ओ साँपक केचुआ पहिले बेर देखने छल। गणेश हरदम अपन संगी सभ संगे हरहारा साँपकेँ बहुत तंग करैत रहैत छल। ताहि लेल ओ अपन मायसँ मारि सेहो खाइत छल मुदा साँपसँ खेलेनाइ ओकर प्रिय खेल छल। ओ एहि बातसँ अंजान छल जे साँप केकरो हानियो कऽ सकैत छैक। गणेशक बाबा भगत छल आ साँपक बिष सेहो झाड़ैत छल। गणेशोकेँ साँप झाड़क सभटा मंत्र मुँहजबानी रटल छल। लोक ओकरा दुआरिपर प्रायः बिख झड़बै लेल अबैत रहैत छल।

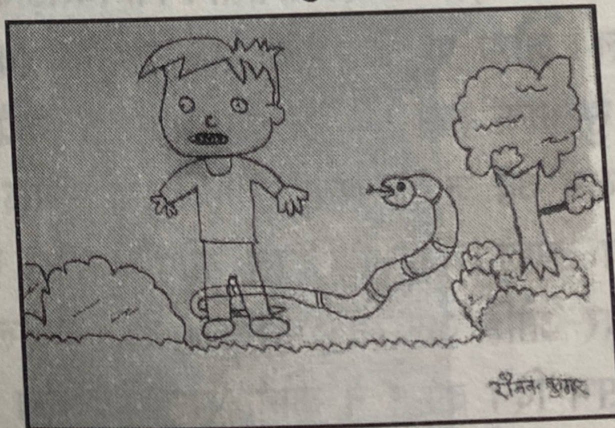
किछु दिनक बाद ओ बाबा संगे आम तोड़ैक लेल गाछी गेल तँ एकटा आमक गाछमे नुरियाएल ओ वैह केचुआबला साँपकेँ देखलक। ओ बाबाकेँ साँप देखबैत बाजल, 'बाबा, ई देखियौ अजोध साँप। बाबा साँप देखैत बजला, 'ई तँ अजगर छियैक, एतऽ कोना आबि गेल। ई साँप लोककेँ नै काटै छैक आ पालतु सेहो होइत छैक!' बाबा सोचलनि जे एहि साँपकेँ पकड़ि घर लऽ जाइत छी, फेर जे बेसी पाइ देत ओकरा हाथे बेचि

लेब। बाबाकेँ बूझल छल जे ई साँप बहुत कीमती होइत छैक।

बाबा ओतहि एकटा घसबहिनीसँ बोरा लेलनि आ हाथेसँ ओहि साँपकेँ पकड़ि बोरामे धऽ घर आनि लेलनि। साँझ होइत गामक गाम सोर भऽ गेल जे भगत बाबा बड़कीटा अजगर पकड़लनि अछि। लोकक मेला दरबाजापर लागि गेल। सभ आश्चर्यसँ ओहि अजगरकेँ देखैत छल। तीन-चारि दिनक बाद साँप खरिदैक लेल पैकार आयल, ओ साँपकेँ देखि बाजल, 'एखन तँ साँप बड छोट अछि, बेसी दाममे नै बिकायत, हम एकर एक हजार दऽ सकैत छी, बेचब तँ बाजू?' बाबा सोचलनि जे जखन ई पालतू अछि तँ किछु दिन पोसिए लैत छी। जखन नम्हर होयत तँ बेसी दाममे बेचब। ओ पैकारकेँ घुरा देलखिन।

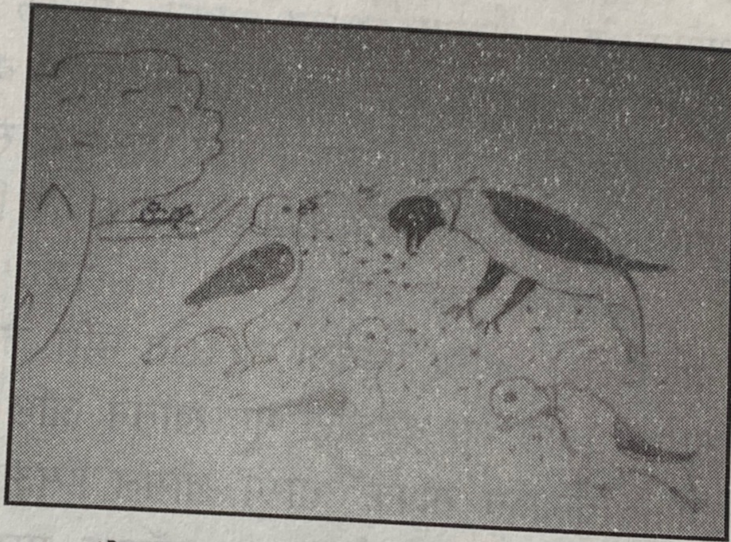
साँपकेँ मूस-बेंग आनि-आनि खूब खुआओल गेल। छह महिना बाद एक दिन साँप बहुत शांत छल, भरल दुपहरियामे गणेश ओकरा लग गेल आ ओकरा उठा कन्हापर राखय लागल आ कि साँप सुगबुगाइत गणेशक पैर गछाड़य लागल आ लगले अपन पकड़ बहुत मजबूत कऽ लेलक। गणेश साँप संगे हरदम खेलाइत रहैत छल मुदा साँपक एहि तरहक व्यवहारसँ ओ अंजान छल। कनियें कालमे गणेशक देह बिनबिनाय लागल, जेना ओकर देहक सभटा नस एक्के बेर दबा गेल होइक! ओकर वाक्-हरण भऽ गेल। तखने दादी ओतय पहुँचली तँ देखैत छथि जे साँप तँ गणेशकेँ खाइ लेल गछारने अछि आ बड़कीटा मुँह खोलने अछि।

दादी चिचिआइत साँपकेँ चारमे खोसल हँसुआसँ काटय लगली। सभ दौड़िकऽ आयल आ साँपकेँ खुजल मुँहपर मारय लागल। ताबत दादीयो हँसुआसँ साँपकेँ दू खण्डी कऽ देलनि। साँप गणेशकेँ छोड़ि देलक मुदा गणेश मूर्छित भऽ गेल छल। एक दिनक उपचारक बाद गणेशकेँ होश आयल। गणेशकेँ साँपक संगे यारी बहुत महग पड़ल।



जोड़ा परबा

भरल पेट अण्डा लऽ एकटा परबाक जोड़ा सुरक्षित ठेकानाक ताकमे उड़ि रहल छल कि तखने ओकर नजरि एकटा नम्हर हवेलीक दुआरिपर ठमकि गेल, जतय अनेको परबा लुधकिकऽ लप-लप घेघ फुलौने भकोसि रहल छल। दुनू जोड़ा परबाकेँ भूख तँ लगले छल, खाना देखिकऽ आरो जोर भऽ गेल। ओ दुनू निच्चाँ उतरबाक निश्चय केलक आ झुण्डमे शामिल भऽ ओहो दुनू लपालप खाइ लागल। ओकरा दुनूकेँ ओहि झुण्डमे शाामिल होइसँ दोसर परबाकेँ कोनो फर्क नै पड़लै, कियैक तँ ओतय खानाक कोनो कमी नै रहैक।



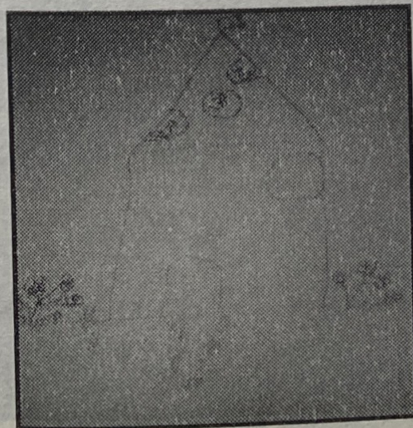
ओहि परबा संगे कतेको बगड़ा सेहो निफिकिर भऽ खाइत छल। कोनो लड़ाइ-झगड़ा, पाँखि नोचा-नोची नै, सभ बड आरामसँ रहैत छल। तखने एकटा बिलड़ा ओहि परबाक झुण्डपर झपटल आ कि ओतहि लाठी लऽ कऽ बैसल बाबा एहन झटहा फेकलनि कि बिलड़ाक थुथून आ पएर दुनू घायल भऽ गेल। जोड़ा परबा ई सभ देखि अपनामे विचार केलक जे एतय तँ खाना संगे सुरक्षाक सेहो पूरा इंतजाम अछि तँ कियैक ने हम सभ आब एतहि रही! तखन ओ जोड़ा परबा ओहि परबा सभक झुण्डमे शामिल भऽ हँसी-खुशी रहय लगल। ओतहि बनल खोपमे अण्डा देलक। किछु दिनक बाद सुन्दर-सुन्दर ओहि अण्डासँ चारिटा चूजा निकलल। ओतय एतेक ने परबा छल जे सभ दिन कोनो ने कोनो अण्डा चटकैत रहैत छल आ चूजा

बहराइते रहैत छल। ओहि चूजा सभक आवाजसँ ओतुका वातावरण सदिखन गुँजायमान रहैत छल।

जोड़ा परबा हवेलीमे आबि बहुत खुश छल। ओ अपन बच्चाक लेल एहने खुशहाल जिनगीक चाह रखने छल से एतय आबि पूरा भेल। बीतैत दिन-राति संगहि चारूटा बच्चा आब पाँखि फड़फड़ेनाइ सीखि गेल छल। एक दिन जोड़ा परबा अपन बच्चा संगे अपने खोपमे आराम करैत छल कि खोपमे एके संगे केतेको परबा पाँखि फड़फड़ाबय लागल, जोड़ा परबा जाबत किछु समझत-बूझत ताबत ओकर चारूटा बच्चाकेँ खोपसँ निकालि रतुका भोज लेल वैह लाठीबला बाबा लऽ गेलाह।

जोड़ा परबा अपना आँखिक सोझाँ अपन बच्चाकेँ फड़फड़ाइत पाँखि देखैत रहि गेल आ भोकारि पाड़ि कानय लागल। ओकर कानब सुनि दोसर परबा सभ ओकरा लग आयल। ओहिमेसँ सभसँ बूढ़ परबा बाजल, 'कियैक कनैत छी? अहाँकेँ तँ चारियेटा बच्चा गेल, हमर तँ नै जानि कतेको बच्चा एकर सभक दावतक हिस्सा बनि गेल! हमर तँ आब नोरो सूखि गेल।' दोसर परबा बाजल, 'हम सभ अपन पेट खातिर मजबूर छी। हमरो सभक बच्चाकेँ तँ यैह हाल होइत अछि मुदा की करी? एतयसँ बाहर जायब तँ चाहे भूखे मरब, चाहे बिलड़ा हाथे मरब, तेँ एतहि रहैत छी। जतेक जिनगी अछि आजादीसँ तँ जीबैत छी।'

जोड़ा परबा अपन चुप्पी तोड़ैत बाजल, 'हमरा नै चाही एहन आजादी, ई तँ गुलामी छियैक। अपन बच्चाकेँ बलि चढ़ा हम अपन पेट नै भरब। अहाँ सभ रहू, हम आब एतय नै रहब।' ओ जोड़ा परबा ओतयसँ उड़ि, ओहि गामक मंदिरमे सभसँ ऊँचगर खोहमे बिना ककरो गुलामी केने खुशीसँ रहय लागल। जतऽ ओकर दोसर बच्चा सभ ओकरा संरक्षणमे सुरक्षित छल।

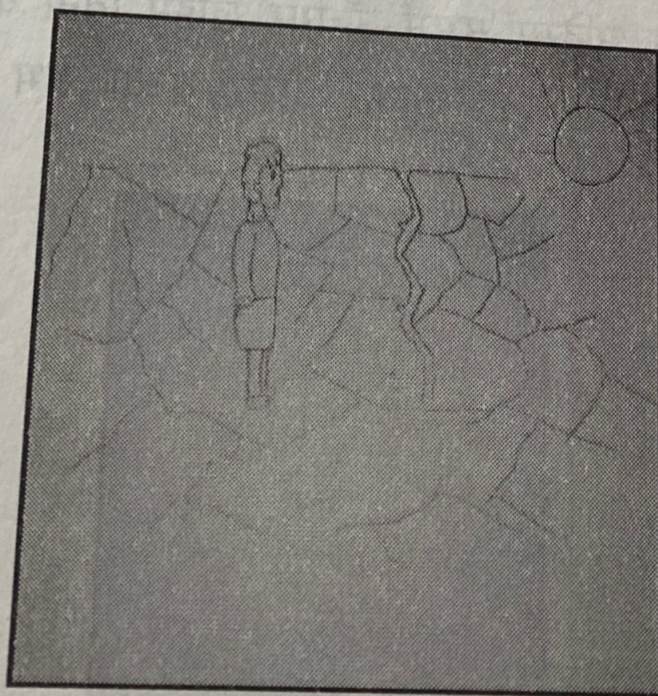


मेघराज

नमन अपन फुलबाड़ीमे अपन पसंदक फूलक गाछ लगौलक। दोसर दिन देखऽ तेल गेल तँ गाछ नीक जकाँ मौला गेल छलैक। बाबा बाड़ीमे घुमैत कहलखिन, 'गाछ-बिरिछ सभ पानि बिन टटाइत छैक।' बाबाक बात सुनि नमन दौड़ल एक लोटा पानि आनि अपन लगेलहा फूलक गाछमे ढारि देलक। दोसर दिन फेर देखलक जे गाछ ओहिना मौलायल अछि।

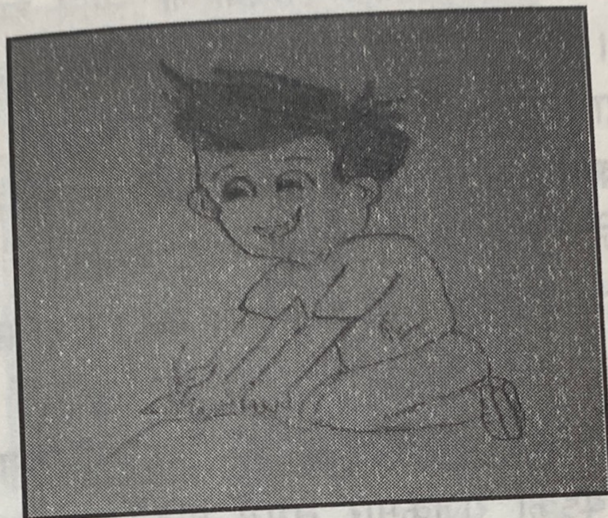
नमन उदास भऽ बाबाकेँ कहलक, 'बाबा, एहि फूलक गाछमे कतबो पानि दैत छियैक तैयो ई मौलायले रहैत छैक। देखियो तँ की करियैक एकरा!' बाबा मेघ दिस तकैत बजलाह, 'एहि रौदीमे की होयत दुपहरियाक झड़कमे सभ गाछ-बिरिछ झुलसि जाइत छैक तँ ओकरा ठाढ़ हेबाक बुत्ता कोना हेतैक! जा धरि ऊपरसँ मेघ नै बरसत ताधरि किछु नै होयत।'

बाबाक बातपर नमन उदास भऽ मेघ दिस निहारैत बाजल, 'हे मेघ, कने बरखा हमरो बाड़ीमे कऽ दियौ ने। अहाँक बरखासँ ई फूलक गाछ जी जेतैक आ सुन्दर-सुन्दर जे फूल हेतैक ओ सभसँ पहिने तोड़िकऽ हम अहींकेँ चढ़ायब। आबो कने बरखा कऽ दियौ ने मेघराज।' नमनक आग्रह जखन मेघ सुनलक तँ ओकरा नै रहल गेल। ओ पानि आनय लेल हिमालय दिस विदा भेल जतय ओकरा मेघराज भेटल। मेघराजसँ पानि माँगलक मुदा मेघराज मना कऽ देलक आ कहलक जे ओहि इलाकामे पानिक दुरुपयोग



कएल जाइत छैक। जे मेघ ओतय पानि लऽ कऽ जाइत छैक ओहि मेघक नामो-निशान मेटा जाइत छैक। तेँ हम आब ओहि इलाकामे नै बरसैक निश्चय केलहुँ अछि।' मेघ खाली हाथ वापस आबि गेल।

राति गर्मी आ उमससँ सभ परेशान छल। नमन फेर अँगनामे ठाढ़ भऽ मेघ दिस ताकय लागल। मेघकेँ नमनक हाल देखल नै गेल, ओ नमन



लग आबि मेघराजक कहल सभटा बात बता देलक। नमन मेघसँ एकटा आग्रह केलक जे हमरा मेघराज लग लऽ चलू, हम हुनकासँ निवेदन करब जे एकहु अछार पानि दऽ दियौ।

मेघ नमनक बात मानि ओकरा अपना पीठपर बैसाकऽ मेघराज लग लऽ गेल। जखन नमन मेघराजसँ बरखाक आग्रह केलक तँ मेघराज किछु शर्त संगहि बरखा करैक लेल तैयार भऽ गेल।

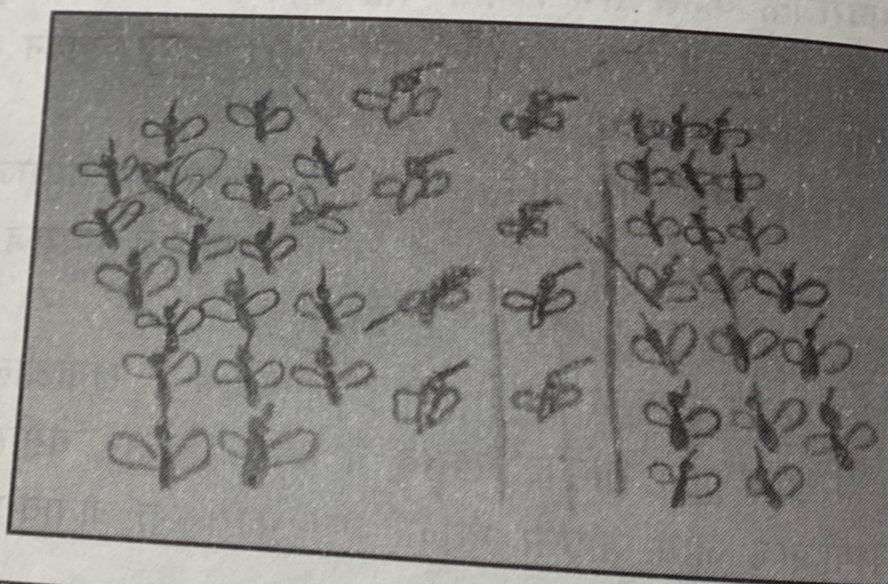
पहिल शर्त ई छल जे जगह-जगहपर पोखरि-इनार खुनाओल जाय जाहिसँ पानि बरखाक बाद बहिकऽ खराब नै होइक। दोसर, बेसीसँ बेसी गाछ-बिरिछ लगाओल जाय जाहिसँ मेघकेँ बल भेटय आ वातावरण सेहो स्वच्छ होइक।

नमन मेघराजक दुनू शर्त मानबाक वादा केलक आ कि तड़तड़ाइत बरखाक बुन्न संगहि ओकर निन्न टूटि गेल। बिहान होइत-होइत पूरा क्षेत्र जलमग्न भऽ गेल। नमनक बाड़ीमे गाछ-बिरिछ जेना हरियर साड़ी पहिर नाचि उठल। नमन अपन शर्तक स्मरण कऽ ओकरा पूरा करबाक योजना बाबा संगहि बनाबय लागल।

होशियार मच्छर

एक बेर मच्छर दलकेँ राजा अपन उत्तराधिकारी घोषित करबाक लेल अपन दुनू बेटाकेँ बजाकऽ कहलक जे 'आब हमर जिनगीक कोनो भरोसा नै अछि। हम एहि सिंहासनपर एकटा योग्य राजाकेँ बैसाबऽ लेल चाहैत छी। हमरा लेल अहाँ दुनू योग्य छी मुदा प्रजा लेल अहाँक अपन योग्यता सिद्ध करय पड़त। काल्हि दरबारमे सभक सोझाँ परीक्षा लेल जायत, ओहिमे जे सफल हैब, ओकरा राजा बनाओल जायत।'

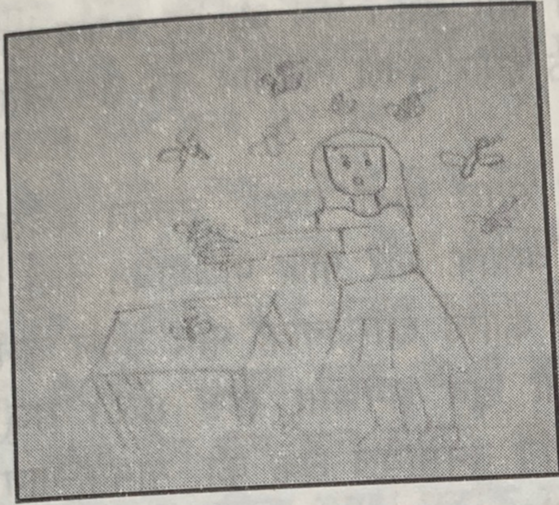
दोसर दिन मच्छरक सभा बजाओल गेल। राजा मंत्रीकेँ राजकुमारक परीक्षा लेबाक लेल आदेश देलक। मंत्री दुनू राजकुमारसँ सवाल पुछलक जे जिंदा रहैक लेल पहिल आवश्यकता की छैक, परिश्रम आ कि संयम? मंत्रीक सवालपर बड़का राजकुमार सभसँ पहिने जवाब देलक 'परिश्रम।' मंत्री कहलक जे 'तर्क दिअ।'



राजकुमार बाजल, 'बिना परिश्रमक हमरा लग भोजन नै आबि सकैत अछि आ बिन भोजन हम जी नै सकैत छी।' राजकुमारक जवाबपर मंत्री कहलक जे, 'अहाँक दसटा मच्छर देल जाइत अछि आ पाँच दिनक समय अछि। अहाँ अपन तर्कक आधारपर अपन टीमक नेतृत्व करब। दोसरो राजकुमारकेँ दसटा मच्छर आ पाँच दिनक समय देल गेल। दुनू राजकुमार अपन-अपन टोली संग विदा भेल। रस्तामे सभकेँ भूख लागल।

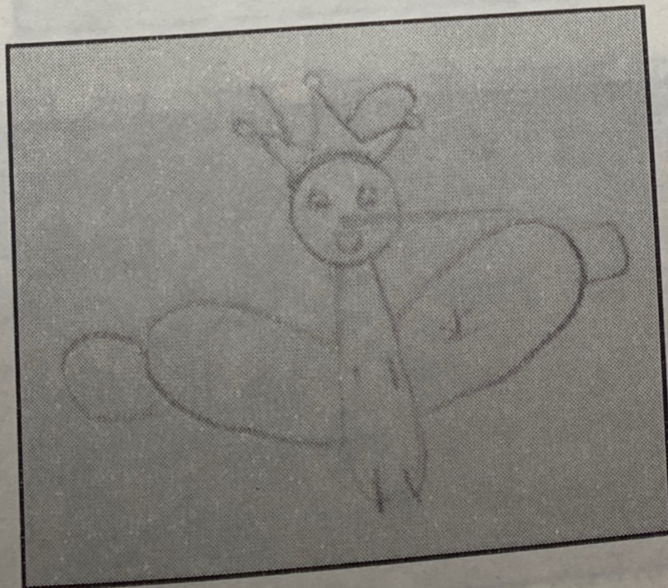
बड़का राजकुमार अपन टोलीकेँ हमला करबाक लेल उत्साहित करैत बाजल, 'जँ दिन-रातिमे ओझारायब तँ भूखे प्राण चलि जायत। जखनहि भूख लगै खाना तखनहि भेटै तँ शक्ति दुगूना भऽ जाइत छैक। दिन-रातुक परिश्रमसँ हम ताकतवर बनि सकैत छी।'

मुदा छोटका राजकुमार शांत आ समझदार छल ओ अपन दलकेँ



अपन भूखपर संयम रखनाइ सिखौलक आ सुतली रातिमे हमला करबाक योजना बनौलक।

पाँच दिनक बाद सभाक आयोजन कएल गेल। दुनू राजकुमारकेँ अपन दलक संग उपस्थित होयबाक आदेश देल गेल। बड़का राजकुमार असगर आयल आ छोटका राजकुमार सातटा मच्छरक संग उपस्थित भेल। सभ कियो छोटका राजकुमारक रणनीति आ संयमक स्वागत केलक आ राजाक मुकुट ओकरा पहिराओल गेल।



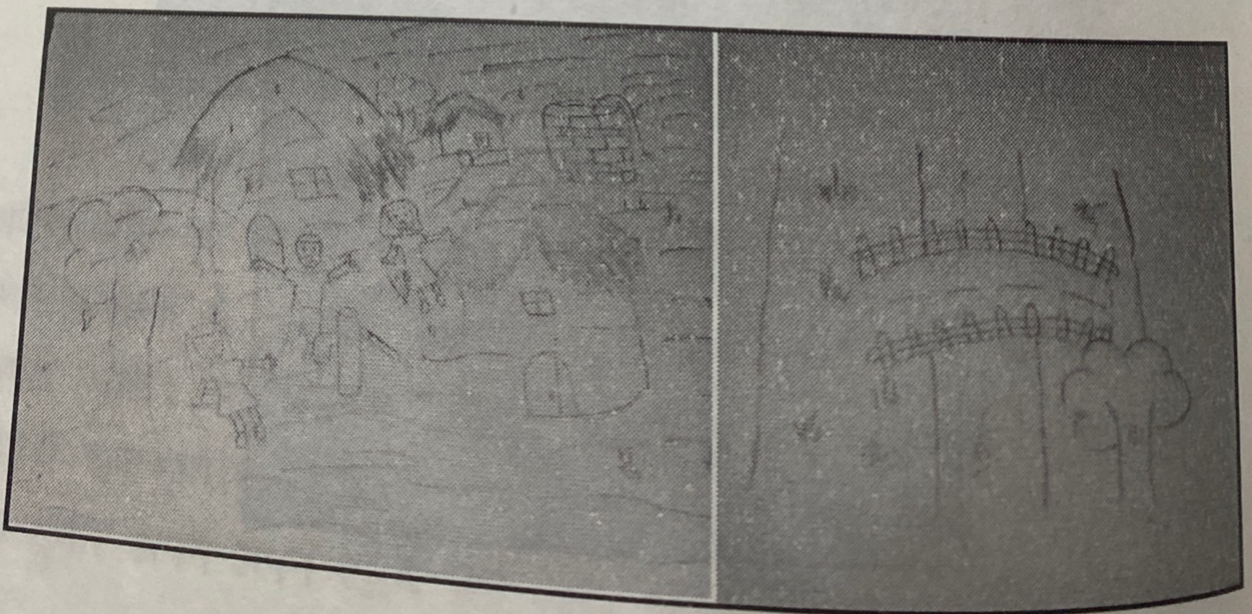
इन्जीनियर बाबू

पूरा गाम छल जलोदीप। सभ कियो घरक छतपर झहरैत बरखामे छत्ता पकड़ने चुक्की मारि बैसल छल आ कि राजूक छतपरसँ पएर पिछड़ि गेल। ओ सरसराकऽ इनार बनल अँगनामे गुप सन खसल आ 'माय-माय' चिचिया उठल।

पँजरा सटि सूतल बाबा राजूकेँ उठबैत बजलाह, 'बउआ कोनो सपना सपनेलहक?' बाबाक भरि पाँज पँजियाबैत राजू बाजल, 'बाबा हम डूबि गेल रही। जेना काल्हि ढोरिलबाक माय डूबल छल।'

बरखा एखनो खूब झमझमा रहल छल। राजू बाबासँ पुछलक, 'बाबा, ई बरखाक पानि तमसायल छैक की, गामक-गाम दहा रहल छैक!' बाबा उत्तर दैत बजलाह, 'बाबू, सभ नदीक अपन धार अछि जे गामक काते-कात बहैत रहैत अछि। आब मनुष्य अपन सुविधा लेल बहैत धारपर ऊँच-ऊँच बान्ह बान्हि देलक जे एहि विनाशक कारण अछि। जखन राति-बिराति कोनो बान्ह टूटैत अछि तँ पूरा गाम भासि जाइत अछि।' राजू बाबाक बात सुनि बाजल, 'बाबा, हम पढ़ि-लिखि इन्जीनियर बनब आ सभ नदीकेँ रस्ता दैत सभक सुविधा लेल सगरे पुल बनायब।'

राजूक बात सुनि बाबा ओकरा पीठपर स्नेहक थपकी देबह लगलाह।

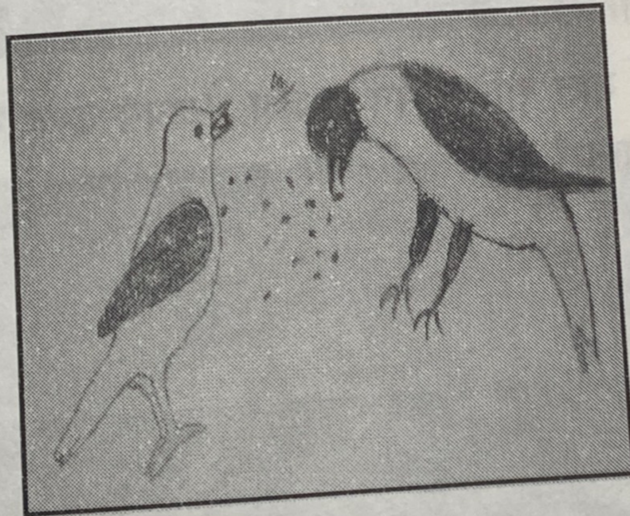


मिथिलाक संस्कार

नमनक अँगनामे छिड़िआयल अन्नकेँ भोरे-भोर कौआ-मैना आ बगड़ा लुप-लुप बीछि रहल छल। ककरो अयबाक आहट सुनि कौआ उड़िकऽ छतपर बैसल मुदा बगड़ा अपना जगहसँ कने घुसकि एम्हर-ओम्हर ताकि फेर अपन खाना हेँरैमे मग्न भऽ गेल।

असोरापर बैसल नमन सभटा देखि रहल छल आ कि तखने बगड़ा उड़ल-उड़ल भनसा घरमे धरनिपर बनल अपन खोतामे जा बैसल।

नमन मोनेमन सोचलक जे ई बगड़ा कतेक निडर आ ढीठ अछि। एतेक नम्हर कौआ डेरायल पड़ाइत अछि आ ई बगड़ा हमर भनसेघरमे घोसिआयल अछि। नमन यैह सभ बात सोचैत अमनक घर खेलाइ लेल चलि गेल। ओकरो एहि ठाम एहिना बगड़ा फुदकि रहल छल। आब नमन

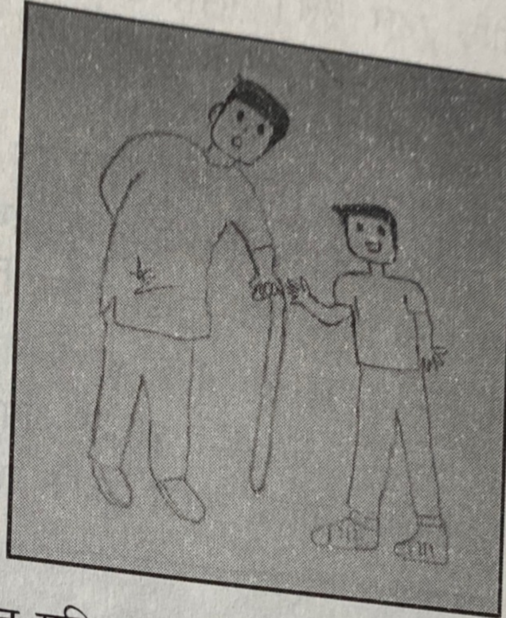


एहि बगड़ाक पहेलीमे आर ओझरा गेल। ओ अमनक घरसँ चोट्टहि घूरि दलानपर बैसल बाबा लग ठाढ़ भऽ गेल आ किछु काल चुप रहलाक बाद बाबासँ पुछलक जे, 'बाबा, ई बगड़ा कियैक सभक अँगने-अँगने फुदकैत अछि? ओकरा हमरा सभक डर कियैक नै होइत छैक? ई बगड़ा कियैक हमरा सभ संगे हमरे घरमे घर बनाकऽ रहैत छैक?'

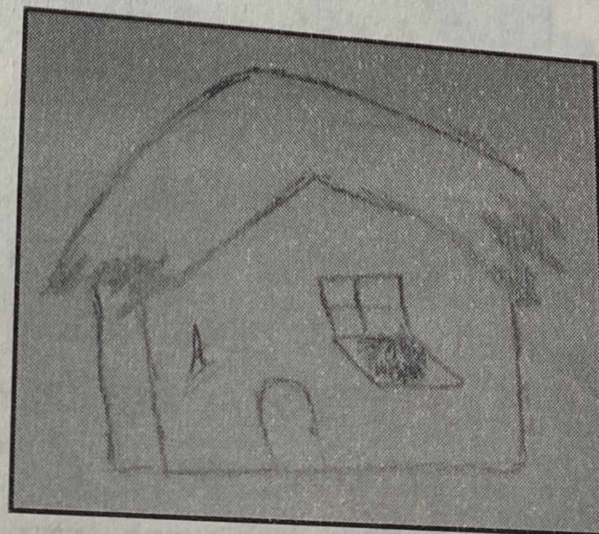
नमनक एतेक रास जिज्ञासाकेँ शांत करैत बाबा बजलखिन, 'बउआ, जाहि मिथिलामे हम रहैत छी ओहि मिथिलाक संस्कारसँ ई बगड़ा पूरा परिचित अछि। एकरा पूर्ण विश्वास अछि जे मिथिलावासी हमर अहित

नै करता। एकर वंशज एहिना सभ दिन हमर वंशज संगहि पोसाइत आयल, वैह विश्वास लऽ कऽ ओ अपन खोता हमरा घरमे बनबैत अछि। मिथिलाक संस्कार एहि बगड़ाक विश्वास जीति लेने अछि। तेँ ओ अँगने-अँगने निधोक भऽ फुदकैत रहैत अछि।

अहूँ बगड़ाक एहि विश्वासकेँ कहियो नै तोड़ब आ एकरा एहिना अपना अँगनामे फुदकय देब।'



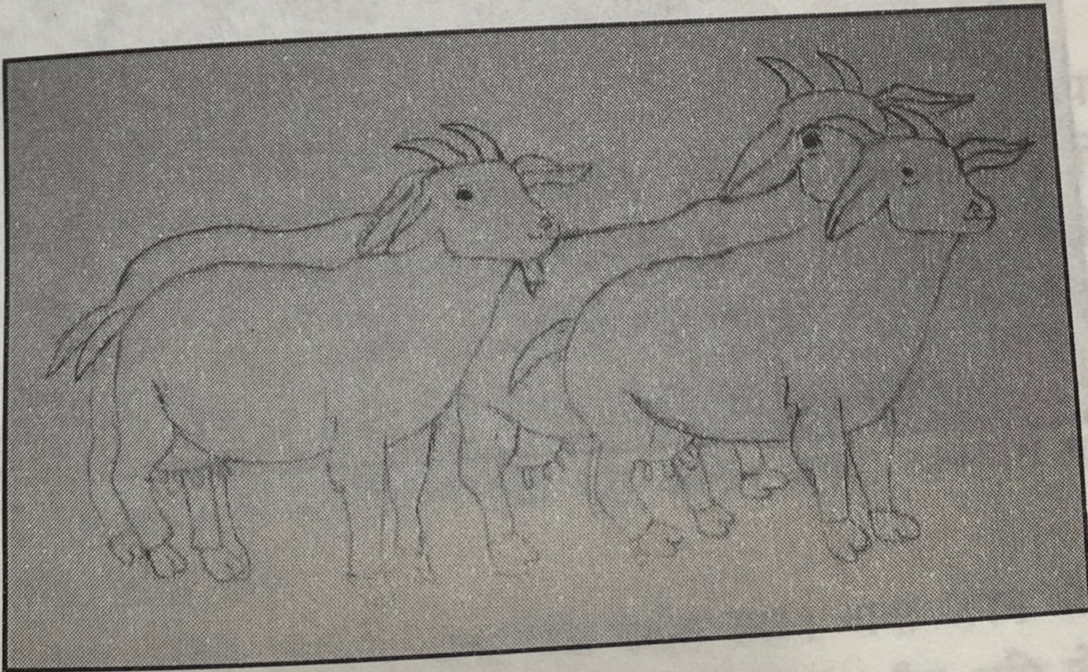
बाबाक बात सुनि नमन बाजल, 'अपन उच्च संस्कारकेँ हम कोना खंडित करब! आबसँ ई बगड़ा हमर सहोदर भेल।'



बकरी

नमन लग बहुत रास बकरी छल। नमनक पूरा परिवार ओहि बकरी सभक बहुत ध्यान रखैत छल। सभकेँ रहय-खाइ आ खेलाइकेँ बहुत नीक व्यवस्था छल। बकरियो सभ सदिखन नमन संगे खेलाइत रहैत छल। किछु दिनक बाद ओहि बकरीक झुण्डसँ बकरी कम होबय लागल।

दोसर बकरी सभ चकित छल जे ओकर संगी कतहु हेरा गेल, जकरा तकबाक प्रयास कियो नै कऽ रहल अछि! आखिर एना कियैक। ई प्रक्रिया चलैत रहल। बकरीक नब बच्चा अबैत छल आ पैघ बच्चा सभ हेरा जाइत छल। ओहि झुण्डक एकटा बकरी अपन बच्चाकेँ पँजियाकऽ बैसि गेल आ भगवानसँ गोहारि लगबए लागल जे भगवान हमरा बच्चाकेँ पैघ नै करब नै तँ ओहो दोसर पैघ बच्चा जकाँ हेरा जायत। बकरीक एहन क्रंदन भगवानकेँ कना देलकनि मुदा भगवानो अपने बनाओल चक्रक आगाँ मजबूर छलाह।



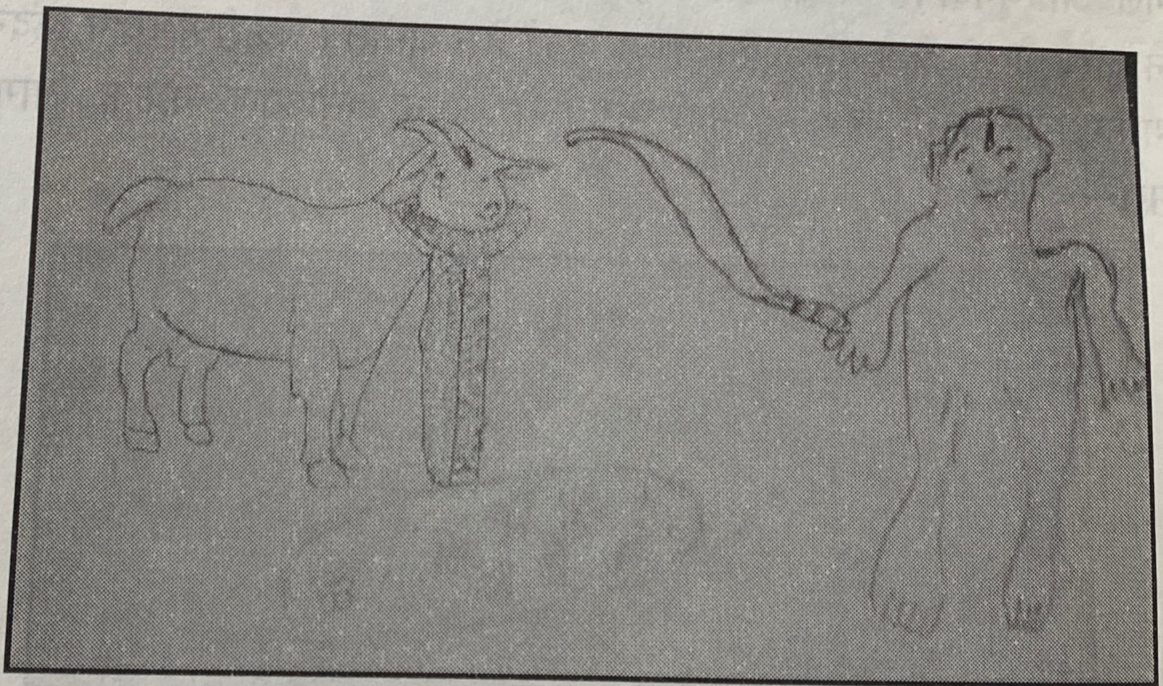
किछु दिनक बाद गाममे दुर्गा पूजा छल। नमन बाबासँ पुछलक जे, 'बाबा, हम भगवानक पूजा कियैक करैत छी, बाबा कहलखिन जे, 'एहि धरतीपर जतेक जीव अछि सभ ओहि भगवानक संतान छैक। हम सभ अपन आराध्यकेँ सुमरि मंगलकामना करैत छी, ओ सभक कष्टनिवारक

छथि आ पूरा संसारकेँ वैह चला रहल छथि। तेँ हुनका खुश करैक लेल पूजा कयल जाइत छैक।'

तखने नमनक दरबाजापर दू गोटे आयल आ छोटका नमहरका सभटा छहटा छागरक सौदा कऽ लेलक। नमन धाँयसँ बाबासँ पूछि बैसल जे, 'देवीकेँ बलि देल जेतैक?' बाबा कहलखिन–'हँ।' नमन बाबाक बात सुनि अपन दिनचर्यामे व्यस्त भऽ गेल।

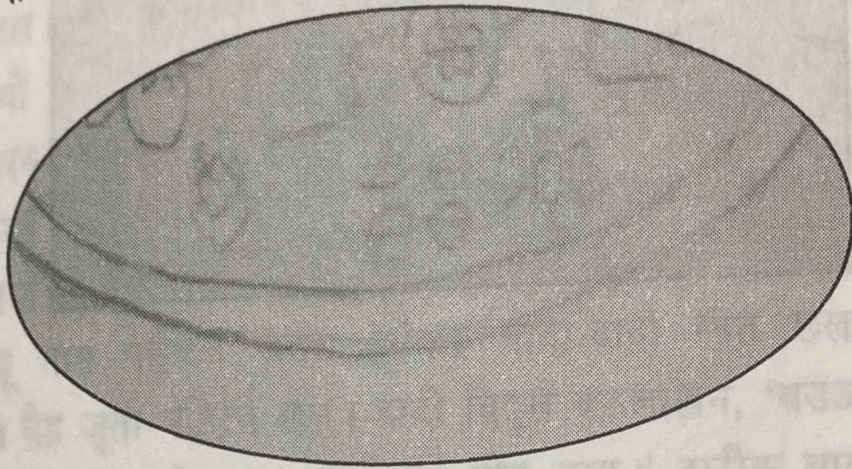
बकरी सेहो ई सभ बात सुनि रहल छल। आब ओ बुझि गेल जे नमहर भऽ ओकर संतान हेराइत नै छल बल्कि देवी-देवताक बलि चढ़ाओल जाइत छल। बकरी भगवानकेँ सुमिरैत कहलक जे 'हमहूँ तँ अहींक संतान छी फेर अहाँ अपने संतानक बलि कोना स्वीकार करैत छी?'

विवश लाचार बकरी डबडबायल आँखिसँ अपन संतानकेँ बलि चढ़ाबय लेल जाइत एकटक देखैत रहि गेल।



राखी

आइ भोरेसँ नमन अपन दीदीसँ राखी बन्हाबय लेल बहुत उत्साहित छल। राखी पाबनि ओकरा बड़ नीक लगैत छल। घड़ीबला राखी पहिर ओ सभ संगी सभकेँ देखबैत रहैत छल। मास दिनसँ बेसी ओ हाथमे राखी पहिरने रहैत छल। दोसर कारण इहो छल जे राखी बन्हलाक बाद दीदी ओकरा ओकर पसंदक चॉकलेटक डिब्बा दैत छलखिन। ओकरा लेल तँ एखन राखीक मतलब घड़ी पहिरनाइ आ चॉकलेट खेनाइ होइत छल।

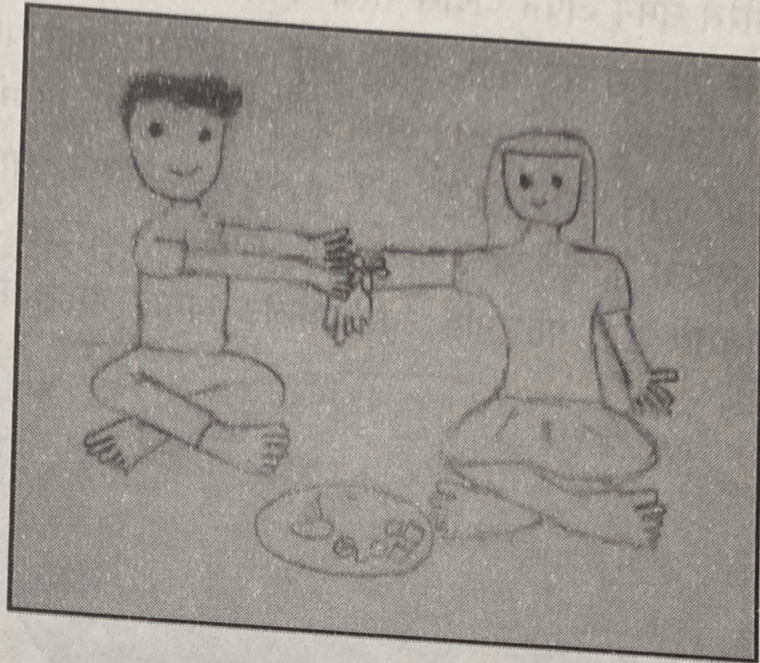


दीदी नमनकेँ राखी बान्हय लेल तैयार केलखिन आ अपनो तैयार भऽ थारी सजाकऽ राखी बान्हय लेल बैसलीह कि बाबा नमनसँ कहलनि, बउआ, राखी बन्हाबयसँ पहिने राखीक महत्व बुझनाइ बहुत जरूरी अछि। हम जे काज करी, हमरा ओकर महत्वक ज्ञान होयबाक चाही।' नमन बाबा लग घुसकिकऽ चुपचाप बैसि गेल। बाबा कहलखिन, 'बाबू, ई कोनो साधारण डोरा आ घड़ी नै, जिम्मेदारीक सूत अछि। जकरा बान्हयसँ पहिने संकल्प लेल जाइत छैक।'

नमन एखनो चुपचाप बाबा दिस देखैत छल। बाबा अपन बातकेँ आगाँ बढबैत बजलाह, 'राखी बन्हबयसँ पूर्व भाइ संकल्प लैत अछि जे ओ अपन बहिनक मान-सम्मान आ स्वाभिमानक रक्षा सभ परिस्थितिमे करत। अपन बहिनक सुख-दुखमे ओकरा संगे ठाढ़ रहत। तखन ई संकल्प कऽ अहूँ एहि पवित्र धागाकेँ अपना हाथपर बन्हबाउ।'

नमन मोनेमन सोचलक जे हरदम तँ सभ किछुसँ रक्षा हमरा हमर

दीदी करैत अयलीह। ओ राखीक थारीमेसँ राखी उठा अपन दीदीक हाथपर बन्हैत बाजल, 'दीदी, एकर पहिल हकदार तँ अहाँ छी।' नमनक बातपर दीदीक आँखि नोरा गेल ओ अपन प्रिय भाइकेँ कोरामे उठा लेलीह।

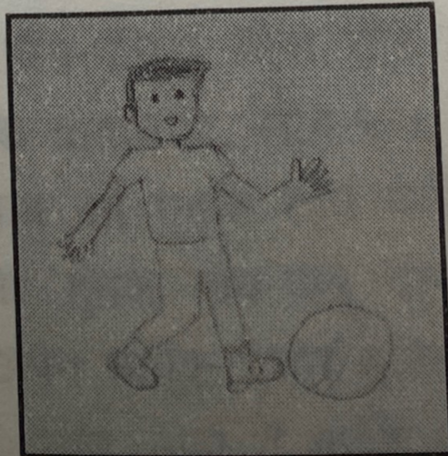


जूता

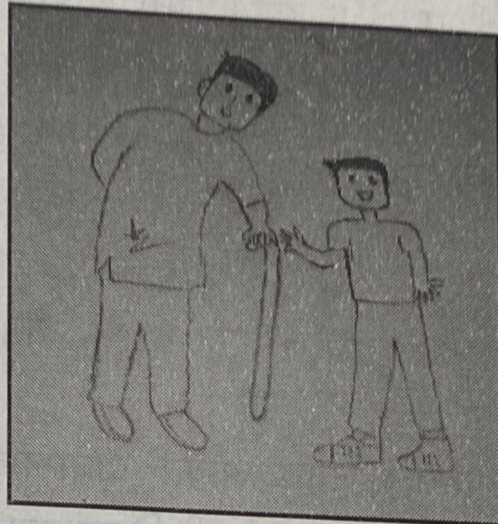
बिट्टू दिल्लीमे रहैत छल। हुनकर मौसीक बियाहक न्योता गामसँ आयल छल। ओहि बियाहमे गाम जयबाक तैयारीमे हुनकर माय-बाबू झोड़ा भरि-भरि सामान सभ कीनै लगलाह। बिट्टू लेल सेहो कपड़ा आ लाइट बला जूता हुनकर बाबू कीनि अनलाह। जूता पहिर चललापर एक्के संगे चारि-पाँच रंगक लाइट भुकभुकाय लगैत छल। नमन ओहि लाइटकेँ देखि बहुत खुश छल। ओ अपन बाबूसँ कहलक जे, 'बाबू आब हम अपन ई जूता पएरसँ कहियो नै उतारब। जखन हम सूतब तखनो हमरा पएरसँ अहाँ ई जूता नै उतारब। हमरा ई जूता बहुत पसंद अछि। हम एकरा अपना लगसँ नै अलग करय चाहैत छी।' बिट्टूक एहि तरहक बातपर ओकर बाबू हँसैत ओकरा पँजिया लेलनि।

बिट्टू गाम पहुँचल जतय ओकर बाबा-दादी रहैत छलाह। ओ एखनो अपन वैह जूता पहिरने छल। दादी बिट्टूसँ कहलखिन, 'बउआ, पहिने जूता उतारि हाथ-पएर धोउ आ गोसाँइकेँ गोड़ लागू।' दादीक बातपर बिट्टू बाजल, 'दादी, हम हाथ-मुँह धोअब मुदा जूता उतारिकऽ पएर नै धोअब, एहिना गोसाँइकेँ गोड़ लागब।' दादी मुसकाइत बजलीह, 'अच्छा अहाँ जुत्ते पहिरि गोसाँइकेँ गोड़ लागि लिअ।' बिट्टू जूता पहिर गोसाँइकेँ गोड़ लगलक आ अँगनामे ठाढ़ सभकेँ पएर छूकऽ आशीर्वाद लेलक।

किछु कालक बाद हुनकर बाबा सेहो 'बिट्टू-बिट्टू' कहैत अँगना एलखिन। बिट्टू बाबाकेँ पँजिया लेलक। बाबा सेहो ओकरा कसियाकऽ



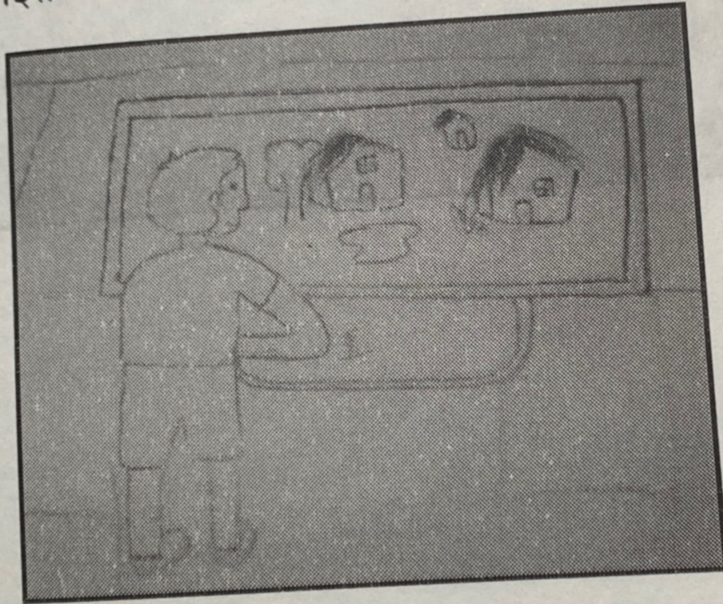
पकड़ैत माथ आ गालपर चुम्मा-चाटी लिअ लगलाह जेना भूखायल लेरूकेँ ओकर माय भेटल होइक! फेर बिट्टू बाबाक आशीष लेबाक लेल जखने नीचाँ उतरल तँ ओकरा अपन बाबाक दुनू जूतासँ बहरायल अँगुरी देखायल। ओ बाबाक फटलाहा जूताकेँ नीकसँ निहारि लेलक आ अपन लाइट बला जूता उतारि बाजल, 'बाबा, अहाँ हमर ई लाइटबला जूता पहिरि लिअ।' बाबाक दुनू आँखिसँ नोर ढबकि गेलनि।



गाम

मानवि तीन सालक बाद गाम जाइत छलीह जखन ओ खिड़की लग बैसि अपन बाबू संगे गाछ-बिरिछ सभ देखैत रहथि। हुनकर बाबू हुनका गाछ सभ आ खेतमे उगल अन्नक बारेमे बतबैत छलाह तँ ओ बहुत ध्यानसँ बाबूक बात सुनि चकित होइत छलीह।

जखन ओ गाम पहुँचय लगलीह तखनो कलम-गाछी, खेत-पथार देखैत अयलीह। सभक दुआरिपर गाय-महींस बान्हल देखि ओ बजलीह, 'बाबू गाममे सभक घरे-घर डेयरी होइत छैक की...?' बाबू हँसैत बजलाह, 'एतय नै अन्नक कमी अछि ने दूधक। सभ गाय-महींस पोसैत अछि आ खूब दूध-दही खाइत अछि।'

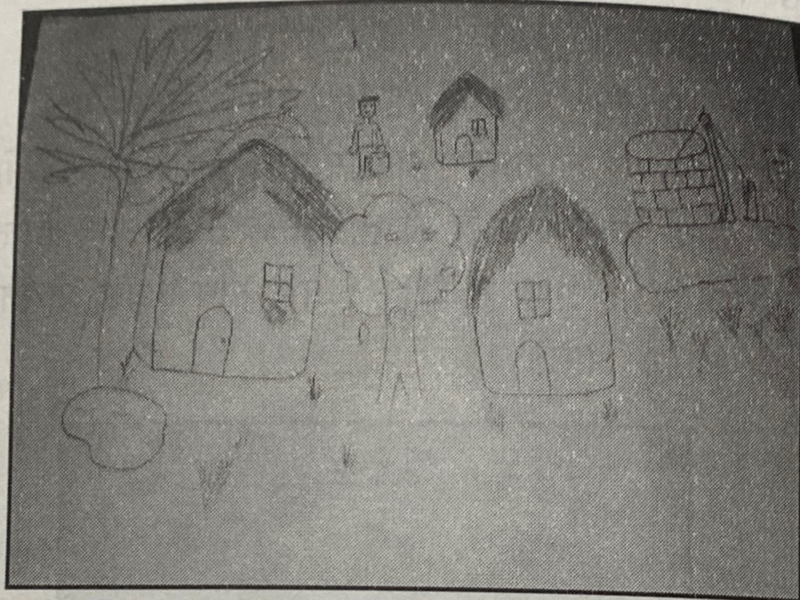


मानवि एखनो बाबूक बात बहुत ध्यानसँ सुनलीह आ चुप रहलीह। घर पहुँचिकऽ हुनका लगलनि जे गामक घर शहरसँ कोनो कम नै। शहरमे तँ एकटा रूममे पाँच-पाँचटा लोक रहैत छल। गाम आबि मानवि बहुत खुश छलीह। गामक वातावरण, खान-पान, गामक घर सभटा हुनका बहुत पसीन पड़लनि, आब ओ एतहि रहय चाहैत छलीह।

बीस दिनक बाद हुनक माय-बाबू वापस शहर जयबाक तैयारी करय लगलाह। मानवि अपन बाबूक पँजरा सटिकऽ बैसि गेलीह आ बाबूक हाथ पकड़िकऽ बजलीह, 'बाबू, अहाँ तँ कहैत रहैत छी ने जे जीबय लेल

तीन चीज जतय भेटि जाइक, ओतहि जीवन सुखसँ बीतैत अछि, अन्न, घर आ वस्त्र! एतय तँ ई तीनू चीज अछि, संगहि बाबा-दादी सेहो, फेर कियैक अहाँ गाम छोड़ि दिल्ली जाइत छी? हमरा गाम बहुत नीक लगैत अछि, एतहि रहू ने...।'

मानविक बात सुनि हुनक बाबू एकटा गंभीर सोचमे डूबि गेलाह।





मुन्नी कामत

नाम : मुन्नी कामत

पिता : श्री दिलीप वर्मा

माता : श्रीमती लक्ष्मी देवी

पति : श्री अरुण कामत

जन्म स्थान : ग्राम- परसा, प्रखण्ड- घोघरडीहा, जिला- मधुबनी

शिक्षा : एम. ए. (हिन्दी)

प्रकाशित : 1. सुखल मन तरसल आँखि (मैथिली कविता-संग्रह) 2017
2. अंततः (मैथिली कविता-संग्रह) 2019
3. चुक्का (मैथिली बाल-संग्रह) 2022

सम्मान : युवा कवयित्री सम्मान
साहित्यांगन, झंझारपुर द्वारा प्रदत्त, वर्ष 2017
राष्ट्रीय कवि सम्मान, मैथिली-भोजपुरी अकादमी
दिल्ली द्वारा प्रदत्त, वर्ष 2019

स्थाइ पता : ग्राम+पोस्ट- सुरियाही, प्रखण्ड- फुलपरास, जिला- मधुबनी

वर्तमान पता : हाउस नंबर-61, स्वरूप पार्क
(निकट साहिबाबाद पुलिस स्टेशन) साहिबाबाद
जिला- गाजियाबाद, पिन- 201005
मो.- 09818832568
Email : munnikamat@gmail.com



नवारम्भ

पटना/मधुबनी

navarambhprakashan@gmail.com

www.navarambh.com



मूल्य : ₹125